दक्षिण झील का चांद

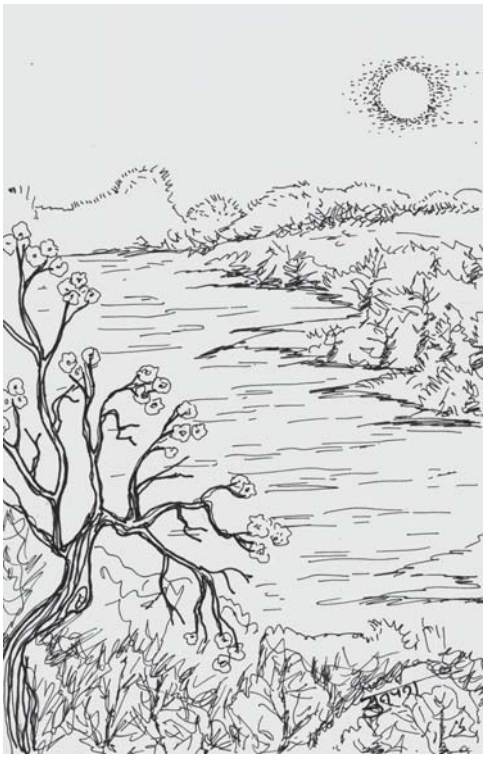

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

दक्षिण झील का चांद	***Dakshin Jheel Ka Chand***
पुस्तकमाला संपादक तापोश चक्रवर्ती	***Series Editor*** **Taposh Chakravorty**
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	***Copy Editor*** **Radheshyam Mangolpuri**
रेखांकन सुनयना बी. पाण्डे	***Illustration*** **Sunayana B.Pande**
ग्राफिक्स जगमोहन	***Graphics*** **Jagmohan**
प्रथम संस्करण जुलाई, 2007	***First Edition*** **July, 2007**
सहयोग राशि 35 रुपये	***Contributory Price*** **Rs. 35**
मुद्रण सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	***Printing*** **Sun Shine Offset** **New Delhi - 110 018**
सौजन्य पीपल्स पब्लिशिंग हाऊस	***Courtesy*** **Peoples Publishing House**

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110 017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

website: www. bgvs.org

BGVS JULY 2007 2K 3500 NJVA 0023/2007

हम लेखकों के विचारों की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं, सहमति/असहमति अलग बात है।

दक्षिण झील का चांद

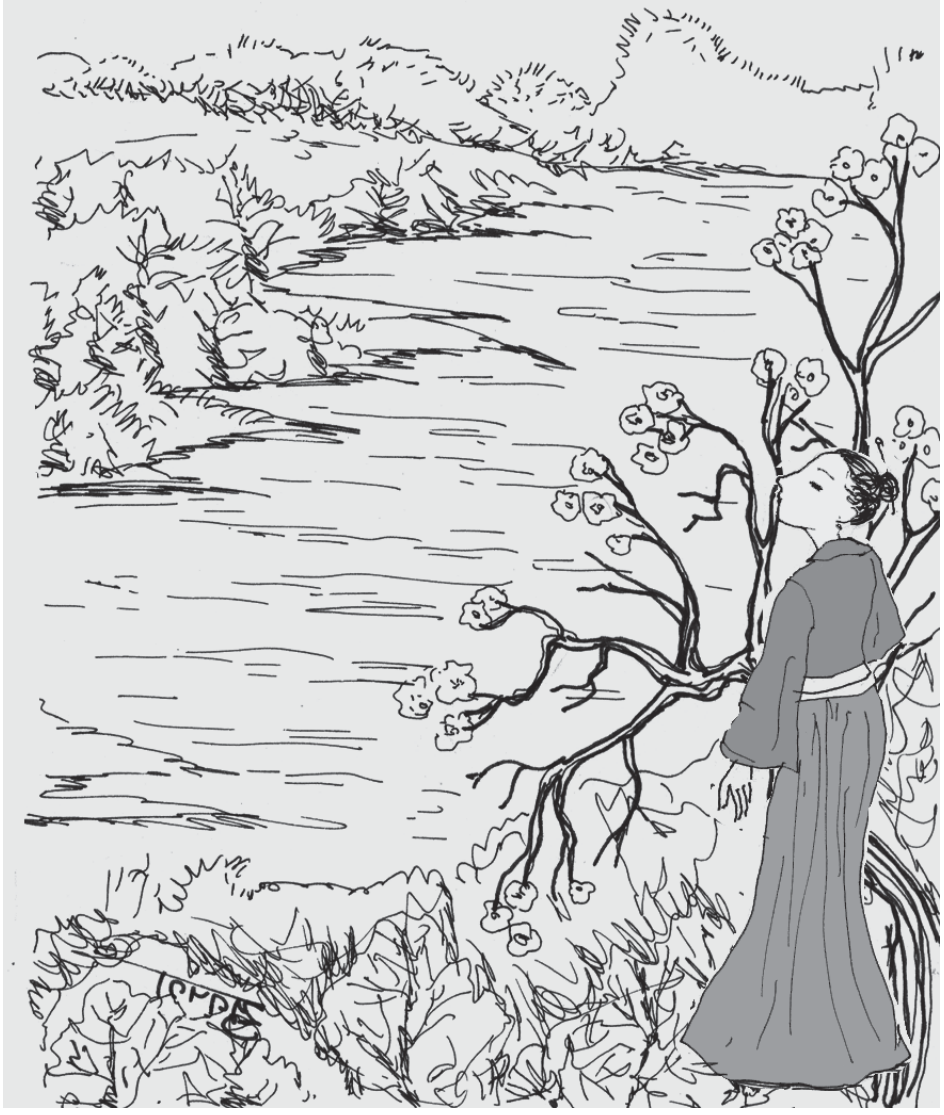

ल्यू फूताओ : एक परिचय

ल्यू फूताओ का जन्म हूपेइ प्रांत की हानयांग काउंटी में 1940 में हुआ था। 1959 में उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन का कार्य किया। 1962 में वह सेना में शामिल हुए। कुछ वर्ष तक सेना के एक अखबार के लिए रिपोर्टिंग करने के पश्चात 1971 से उन्होंने सांस्कृतिक कार्य आरंभ किया। 1979 में ल्यू पूर्णकालिक लेखक बने और उसी वर्ष उन्होंने चीन लेखक संघ की सदस्यता ली।

1972 से इनकी कहानियां और गद्य रचनाएं नियमित तौर पर प्रकाशित होने लगी। जिनमें ***संकट की घड़ी*** और ***नीला ताप्ये पहाड़*** उल्लेखनीय हैं। 1978 में प्रकाशित उनकी कहानी ***चश्मे*** को सर्वश्रेष्ठ कहानी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

दक्षिण झील का चांद

1

कुछ साल पहले दक्षिण झील के वक्राकार किनारे के पास की जमीन पर केवल एक ऊहान तृतीय राज्य संचालित दवा कारखाना था। पर पिछले कुछ वर्षों में प्रदूषण के खिलाफ शहरी इलाके के नागरिकों के शोर मचाने के कारण शहर के एक के बाद दूसरे रासायनिक कारखाने यहां आते चले गए। यह अब शहर का रासायनिक उद्योग केन्द्र बन गया है।

आइए, आपको इन कारखानों का परिचय दूं। घुमावदार पक्की सड़क के सामने इन कारखानों के साइनबोर्ड एक पंक्ति में लगे हैं: मध्य दक्षिण रासायनिक कारखाना, लाल झंडा रासायनिक कारखाना, चिंगारी रासायनिक कारखाना आदि। अनेक नाम निश्चय ही शानदार थे। पर सचमुच में ये सब 'छोटे कारोबार' थे, जिनमें सौ के लगभग मजदूर काम करते थे। कुछ लोग इन्हें नीची नजरों से देखते थे और कारखाना कहना पसंद नहीं करते थे। इन्हें वे इस नाम के योग्य नहीं समझते थे। पर वे तेजी से बढ़े और उनमें से कुछ कारखानों के उत्पाद की बराबरी करने वाला उत्पाद मध्य-दक्षिण चीन में नहीं था।

चिंगारी रासायनिक कारखाने का उदाहरण लें। यह देखने में उजाड़ लगता था और कोई भी इसके बारे में अच्छा अनुमान नहीं लगा सकता था। पर इसके कई मशहूर उत्पाद थे, जैसे चिरनूतन लेप, फेरिक

क्लोराइड, फेरस क्लोराइड और यहां तक कि सोया सॉस की बोतल का छोटा रबड़ का ढक्कन। इन सबका सालाना उत्पाद-मूल्य 10 लाख य्वान से भी अधिक था। यहां का फेरिक क्लोराइड पूरे ऊहान शहर में जलशुद्धिकारक के रूप में मशहूर था। इस छोटे कारोबार का पूरा नाम 'सिंह गली का चिंगारी रासायनिक कारखाना, ऊछांग नागर क्षेत्र, ऊहान शहर' था, पर इसकी मुहर में जानबूझकर 'सिंह गली' को नहीं रखा गया था। वरिष्ठ अधिकारियों से इसकी अनुमति लेने के लिए कारखाने की पार्टी सचिव वान को इसका कारण समझाना पड़ा था। उन्होंने कहा, "हमारे कारखाने के युवा मजदूर चिंतित रहते हैं कि 'छोटे कारोबार' का नाम सुनकर उनकी कन्या-मित्र मुंह फेर लेंगी। इसके अलावा ये दो शब्द व्यापार में कोई सहायता भी नहीं करते। यदि लोगों ने 'छोटे कारोबार' का नाम लेबल पर देखा तो वे उत्पाद पर भी विशेष ध्यान नहीं देंगे।" हालांकि ये बातें असंगत प्रतीत हुईं, पर पार्टी सचिव वान की व्याख्या वाजिब और तार्किक लगी। युवा मजदूरों के प्रेम की गंभीर समस्या और विशेषकर कारखाने के भविष्य को ध्यान में रखकर वरिष्ठ अधिकारियों ने मौन सहमति दे दी। पर मुहर में आए बदलाव से कारखाने की प्रतिष्ठा में कुछ खास सहायता न मिली। इसके बाद भी कारखाने को कोई सामग्री खरीदनी होती तो उन्हें अपनी जरूरत जोर देकर बतानी पड़ती, मानो कोई पक्षपात करा रहे हों। दूसरी तरफ इस छोटे कारोबार का उत्पादन अच्छा होने के बावजूद न तो घरेलू उपयोग का था और न खेलने के काम आ सकता था। यहां के उत्पादों के नाम सुनकर लोगों के कान खड़े हो जाते थे। ये क्या उत्पाद हैं? कोई जहरीली दवा हैं शायद? इस तरह, उत्पादन बढ़ाने में भी किसी की मदद नहीं मिलती थी।

तो यह स्थिति थी। पचास वर्षीय पार्टी सचिव वान के सामने एक नई समस्या आ खड़ी हुई थी। कारखाने के मुख्य उत्पाद फेरिक क्लोराइड को द्रव के बजाय अब ठोस रूप में उत्पादित करना था। इस काम के लिए एक तीन मंजिली इमारत बना ली गई और आवश्यक मशीनें लगा दी गईं। पर कारखाना एक ब्वायलर जुटाने में असफल

रहा। सचिव वान के शब्दों में, "पानी सिर के ऊपर से गुजरने वाला है।" यह सचमुच अत्यंत नाजुक घड़ी थी!

पार्टी सचिव के बारे में क्या बताऊं? वह पार्टी सचिव तो थीं ही, पर वह एक गृहिणी भी थीं। काम करने का उनका तरीका किसी जाने-माने सिद्धांत के कठघरे में नहीं आता था, पर उनका कहा सभी मानते थे। कारखाने को किसी चीज की जरूरत होती तो वह दो फीट लंबी इस्पात की पटरी बजातीं और सभी मजदूरों को बुलाती थीं। मजदूरों के सामने कारखाने की समस्या रखकर उनसे सलाह मांगती थीं। मजदूर घर लौटकर अपने परिवार में सलाह करते थे। जरूरत पड़ने पर वे अपने दोस्तों और संबंधियों से मिलते थे या दूसरी इकाइयों और बड़े कारखानों में काम करने वाले अपने परिचितों से भी राय लेते थे। मौखिक वादा हो जाने के बाद कारखाने की मोहर लगाकर औपचारिक पत्र भेजा जाता था। आमतौर पर कारखाने की जरूरत की सामग्री को यथाशीघ्र उपलब्ध करने के लिए पार्टी सचिव वान स्वयं अनेक लोगों से मिलती थीं। पर इस बार सारी कोशिशों के बावजूद ब्वायलर नहीं मिल पा रहा था। आखिरकार कुछ मजदूर एक महत्वपूर्ण सूचना ले आए कि च्यांगनान न्यू वाटरवर्क्स ने एक नया बड़ा ब्वायलर खरीदा है। उनका पुराना छोटा ब्वायलर उनकी कॉलोनी में रखा है। तुरंत एक संदेशवाहक को ब्वायलर के बारे में पता लगाने के लिए भेजा गया, पर वाटरवर्क्स ने उसे बेचने से मना कर दिया। उन्होंने जवाब में केवल यह कहा कि पुराने ब्वायलर की उन्हें जरूरत है। कुछ ही दिनों के बाद 'छोटे कारोबार' के मजदूरों को जानकारी मिली कि यदि वाटरवर्क्स के आपूर्ति विभाग के प्रभारी सहप्रबंधक य्वान राजी हो जाएं तो बिना परिचय-पत्र के भी ब्वायलर मिल सकता है। सोच-विचार कर यही फैसला लिया गया कि कोई सहप्रबंधक य्वान से मिलने जाए। पर उन तक पहुंचना आसान काम नहीं था, इसलिए कोई भी इस कार्य के लिए तैयार नहीं हुआ।

टन···टन···टन··· पार्टी सचिव वान ने फिर से घंटी बजाई। उन्होंने

पूछा कि कोई इस काम के लिए तैयार है? पर मजदूरों के बीच खामोशी बनी रही। वे खामोशी से पार्टी सचिव वान को देख रहे थे।

"ऐसे एकटक मुझे देखने से क्या होगा? आखिर हम क्या करें?"

"मैं कोशिश करता हूं।" अचानक किसी ने दबी आवाज में कहा। आम तौर पर इस व्यक्ति पर कोई ध्यान भी नहीं देता। पर इस नाजुक घड़ी में जब पार्टी सचिव वान और मजदूर किसी अकालग्रस्त इलाके में अनाज के लिए प्रतीक्षारत नागरिकों जैसे थे, कार्य की जिम्मेदारी लेने वाला कोई भी आदमी उनके लिए उद्धारक के समान था। पर उन्होंने जब उस व्यक्ति को देखा तो मजदूरों को ही नहीं, पार्टी सचिव को भी संदेह हुआ और उनका दिल बैठ गया।

उस व्यक्ति का नाम खो थिंग था। वह एक नौजवान था। सभी की नजरें उस पर टिकी थीं। उसका गोरा चेहरा अचानक लाल हो गया। वह 185 सेंटीमीटर लंबा और देखने में आकर्षक था।

"ठीक है, तुम कोशिश कर सकते हो और चाहे जैसे भी···जैसे भी हो··· तुम्हें ब्वायलर ले आना है।" पार्टी सचिव ने अधमुंदी आंखों से उसे देखते हुए कहा। वह इसके बारे में रत्ती भर भी आश्वस्त नहीं थीं। वह तो यह भी कहना चाह रही थीं, "जब कोई जाने को तैयार नहीं है तो तुम जाओ, पर मुझे तुमसे किसी चमत्कार की उम्मीद नहीं है।" पर उन्होंने आखिरी समय में उसे उत्साहित करने के विचार से जाने को कह ही दिया।

हालांकि खो थिंग किसी तकनीशियन के पद पर नहीं था, पर उसमें तकनीशियन का काम करने की योग्यता थी और अपने काम की दक्षता के लिए पूरे कारखाने में मशहूर था। भविष्य में खुलने वाले ठोस फेरिक क्लोराइड कार्यशाला बड़ी और आधुनिक थी। कार्यशाला और इसका साज-सामान बिठाने की रूपरेखा और सारी तकनीकी प्रक्रिया इसी युवक ने तैयार की थी, हालांकि वह कभी किसी तकनीकी कॉलेज में नहीं पढ़ा था। दरअसल उसने चीन के शहरी युवकों का ही रास्ता अपनाया था। उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई

पूरी करने के बाद उसे दो साल के लिए देहात में खेती-बाड़ी के लिए भेज दिया गया था और वहां से लौटने पर उसने 'छोटे कारोबार' में नौकरी कर ली थी। आज के शिक्षित युवकों का यही एक रास्ता था; उसके सामने दूसरा कोई चारा न था। वहां आने के कुछ ही समय बाद वह कारखाने की अनेक तकनीकी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष हो गया। जब भी कोई नई तकनीक अपनानी होती थी, लोग उसी पर भरोसा करते थे। वह नियम बनाकर नए उपकरण के निर्देशों का सावधानी से अध्ययन करता था और धीरे-धीरे उन पर प्रयोग कर दक्षता हासिल कर लेता था। उसने अपने साथी मजदूरों का सिर कभी नीचे नहीं होने दिया। सभी नए मजदूर उसकी इज्जत करते थे और पुराने मजदूर भी मानते थे कि वह असाधारण व्यक्ति है। फिर भी अफसोस की बात यह थी कि ईमानदार होने के साथ-साथ वह बहुत अधिक शर्मीला था। उसके दिमाग में बहुत-सी बातें थीं, पर बोलने के

मौके पर शब्द धोखा दे जाते थे।

शायद इसी कारण उस शर्मीले युवक द्वारा काम स्वीकार करने पर पुराने मजदूरों को आश्चर्य हुआ, उसने इसके पहले कभी इस तरह के काम की जिम्मेदारी नहीं ली थी और आज वह सहप्रबंधक य्वान से मिलने जाने और ब्वायलर लाने की कोशिश करने के लिए आगे आया था!

वास्तव में खो थिंग को भी अपने ऊपर संदेह था कि उसे सफलता मिलेगी।

2

आइए, अब एक दूसरी बात करें। ऊछांग के बाजार की भीड़ में कभी-कभी दो समान लंबाई की लड़कियां दिखाई पड़ती थीं। उन दोनों की लंबाई लगभग 172 सेंटीमीटर थी। उनके बाल समान ढंग से कटे थे और वे एक जैसे कपड़े भी पहनती थीं। गली में चाहे जितनी भीड़ हो, फुटपाथ पर चाहे जितने आदमी चल रहे हों, वे दोनों हमेशा हाथ में हाथ डाले एक साथ घूमती फिरती थीं। चूंकि दोनों लंबी और संतुलित आकृति की थीं, इसलिए उनकी तरफ लोगों का ध्यान स्वयं ही चला जाता था। यहां तक कि उच्छृंखल लड़के भी उन्हें रास्ता दे देते थे और उन्हें जाता देखकर उनकी प्रशंसा करते थे। गोल चेहरे वाली लड़की का नाम ली लू था और अंडाकार चेहरे वाली का य्वान श्या था। वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ी थीं, पर अलग-अलग कक्षा में थीं। समान कद-काठी, समान अभिरुचि और इच्छाओं के कारण दोनों में दोस्ती हो गई थी। वे दोनों इतनी गहरी सखियां थीं कि जब भी मिलतीं बातें खत्म ही नहीं हो पातीं। वे एक-दूसरे के प्रेम-संबंधों में भी सलाह देतीं। उनकी प्राथमिक शर्त भी समान थी : युवक 185 सेंटीमीटर से कम लंबा नहीं होना चाहिए। भगवान भला करे! यह एक बड़ी शर्त थी। पारिवारिक पृष्ठभूमि, नौकरी और मासिक वेतन जैसी दूसरी शर्तों को छोड़ भी दें तो उनकी पहली शर्त के अनुसार ही 185 सेंटीमीटर लंबा और वह भी उनकी उम्र का तथा

इसी शहर का युवक पाना एक मुश्किल काम था, जबकि देश के युवकों की औसत लंबाई इतनी नहीं थी। उनमें सहमति थी कि इस मामले में वे केवल एक-दूसरे की सलाह मानेंगी, दूसरों की सलाह और माता-पिता के आदेश या किसी मध्यस्थ की सिफारिश पर ध्यान नहीं देंगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई ली लू को किसी युवक से मिलवाता तो ग्वान श्या उसे अच्छी तरह जांचती थी। यदि उसकी नाक फड़की और उसने कहा, "ओह, कितना नाटा है!" तो यह सुनकर ली लू के भाव अचानक बदल जाते थे और बेचारे युवक की कोशिशों का वह अंत होता था।

मैंने अभी-अभी बताया कि दो सखियां भीड़ भरे बाजार में अक्सर एक साथ घूमती थीं। यह छह महीने पहले की बात थी। और अब ग्वान श्या की स्वीकृति से ली लू को एक दोस्त मिल गया था। उनकी छुट्टी के दिन शुक्रवार को अब ली लू और ग्वान श्या पहले की तरह साथ नहीं रहती थीं। यह सच है कि ली लू अपने दोस्त के साथ ग्वान श्या से मिलने आती थी, पर ग्वान श्या ने महसूस किया कि वे उसका दिल रखने के लिए ऐसा करते हैं ताकि वह उपेक्षित महसूस न करे। वह जब भी उन दोनों को साथ-साथ जाते देखती वह मंत्रमुग्ध होकर उनके ओझल होने तक उन्हें देखती रहती थी।

ग्वान श्या की मां ने उसे बार-बार सलाह दी कि अपनी शर्त पर इस तरह अडिग न रहे। क्यों नहीं अपने बराबर लंबाई के या देखने में कुछ छोटे युवक पर विचार करती हो? पर मां की सलाह का हमेशा ग्वान श्या और ली लू ने दृढ़ता से विरोध किया। एक बार ग्वान श्या की मां ने कहा, "अपने पिता को देखो। वह लंबाई में मुझसे छोटे हैं, पर इससे क्या फर्क पड़ता है।" ग्वान श्या ने अपनी मां को घूरकर देखा और कहा, "तुम चाहती हो कि सभी तुम्हारे जैसे हो जाएं।" फिर उसने संक्षेप में बताया कि वह कैसा पति चाहती है– लंबा और ईमानदार। उसने अपने घर में अपनी शर्त बताई और कहा कि इससे कम पर वह नहीं मानेगी। उसके पिता अपना गुस्सा न रोक सके और बोले, "क्यों, तुम्हें नहीं लगता कि राजनीतिक मानदण्ड पहले रखना चाहिए?" ग्वान श्या ने हठ के साथ कहा, "ठीक है तो ईमानदार और लंबा। और कोई आपत्ति?"

ग्वान श्या राज्य संचालित तृतीय दवा कारखाने में काम करती थी और रोज साइकिल से कारखाने आती-जाती थी। वसंत में एक दिन उसकी इच्छा ली लू से मिलकर बातें करने की हुई। दक्षिण झील के किनारे-किनारे सड़क बनी थी। शाम के सूरज की तिरछी किरणें झील की लहरों को चमका रही थीं और हरे पहाड़ों की छवि झील में उभर रही थी। ग्वान श्या साइकिल चलाती हुई आराम से चारों तरफ देखती जा रही थी। कई नाटे युवकों से आगे निकलकर उसे एक प्रकार का आत्मसंतोष हो रहा था। अचानक 'अमरपक्षी-12' पर सवार एक युवक बगल से निकला। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भी अपनी साइकिल तेज की और थोड़ी ही देर में उससे आगे निकल गई। आगे जाकर उसने पलटकर उस युवक को देखा, वह युवक भी ली लू के दोस्त के समान लंबा था। यह अत्यंत रोचक बात थी। थोड़ी देर के बाद उसने फिर पलटकर देखा कि कहीं वह युवक उससे आगे निकलने की कोशिश तो नहीं कर रहा है। काम से घर लौटते समय खो थिंग जैसे युवक के लिए यह अपमान की बात थी कि कोई लड़की उससे आगे निकल जाए। वह ईमानदार और अच्छे स्वभाव का युवक था। पर

ईमानदार व्यक्ति भी कभी-कभी विचित्र हरकतें करता है। जब उसने महसूस किया कि इस लड़की ने आगे निकलकर चुनौती दी है तो उसने भी अपनी साइकिल तेज की और उससे आगे निकल गया। पर ग्वान श्या को उसकी यह हरकत अच्छी नहीं लगी। उसने पेशेवर साइकिल चालक की तरह झुककर पूरी ताकत से तेज पैडल मारे और जल्दी ही खो थिंग से आगे निकल गई। आगे निकलकर अभी उसने सांस भी नहीं ली थी कि खड़ाक की आवाज हुई और पैडल ढीला हो गया। थोड़ी देर तक चलने के बाद उसकी साइकिल अपने-आप रुक गई। पीछे आने वाले 'नाटे' भी उसकी हंसी उड़ाते हुए उससे आगे निकल गए।

उनकी हंसी सुनकर खो थिंग ने पीछे मुड़कर देखा, वह लड़की असमंजस में खड़ी थी। उसे अफसोस हुआ। वह साइकिल मोड़कर उस लड़की के पास पहुंचा।

"क्या हुआ, मैं देखूं क्या?" यह कहते हुए उसने अपनी जेब से एक छोटा पेचकस निकाला। फिर अपने चाबी के गुच्छे में लगा स्पैनर लेकर ग्वान श्या की मंजूरी की प्रतीक्षा किए बिना वह 'अमरपक्षी-18' साइकिल की जांच करने लगा।

"साइकिल की चेन टूट गई," उसने कहा।

ग्वान श्या ने असहाय नजरों से साइकिल ठीक करते हुए युवक को देखा। वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। उसने लंबी सांस छोड़ी, "ओह, क्या मुसीबत हो गई!"

शाम ढलती जा रही थी। झील के किनारे ठंडी हवा चल रही थी। शाम ढलने के साथ झील रंग बदल रही थी। पहले वह हरी से हल्की नीली हुई और फिर उस पर काली परत चढ़ गई। आकाश और झील का रंग एक-सा रहस्यपूर्ण हो गया था। ग्वान श्या लंबी होने के बावजूद थी तो लड़की ही। एक अपरिचित युवक के साथ शाम के सन्नाटे में खड़ी आखिर वह अपनी घबराहट नहीं रोक सकी।

अंधेरे की चादर हटाकर धीरे-धीरे चांद ऊपर आया और आलोकित आकाश की छाया झील में दिखाई पड़ी। वसंत की सुनसान रात में चांद और सड़क की बत्तियों की रोशनी संयोग से मिले युवक और युवती को बहला रही थी। य्वान श्या अपनी साइकिल के लिए चिंतित थी, पर थोड़ी डरी हुई भी थी। वह युवक की भलमनसाहत से दबी थी और धन्यवाद व्यक्त करने के लिए उचित शब्दों को ढूंढ़ने में लगी थी। अचानक उसने सोचा– 'उसे अपने किए की सजा स्वयं भुगतनी चाहिए! अपनी समस्या से वह दूसरों को क्यों परेशान करे? पर यदि वह छोड़कर चला गया तो वह क्या करेगी? वह साइकिल ढकेलती हुई या कंधे पर लादकर घर जाएगी?' वह दुविधा में पड़ी थी। फिर से सोचने पर उसने यही फैसला किया कि वह उस युवक पर भरोसा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। वह युवक साइकिल ठीक करने में जी-जान से लगा था। अभी तक तो वह उसके नाम से भी अपरिचित थी।

आखिरकार खो थिंग ने कहा, "देखो, ऐसा करते हैं! यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास हो तो तुम मेरी साइकिल से घर चली जाओ, तुम्हारे घरवाले परेशान हो रहे होंगे। मैं तुम्हारी साइकिल ठीक कर दूंगा, पर इसमें समय लगेगा। कल हम लोग अपनी साइकिल बदल लेंगे।" उसने सोच लिया था कि लड़की की साइकिल यदि यहां ठीक नहीं हुई तो वह इसे लेकर घर चला जाएगा।

य्वान श्या ने पूरी गंभीरता से

कहा, "पर मैं तुम्हें यहां अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती।"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है। तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं अपनी पुरानी साइकिल के बदले तुम्हारी अच्छी व आधुनिक साइकिल लेकर चलता बनूंगा। चिंता न करो। साइकिल पर पीछे नंबर की प्लेट लगी है। तुम थाने में जाकर मेरा नाम व ठिकाना आसानी से पता लगा सकती हो।"

ग्वान श्या ने तपाक से कहा, "नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था।"

"फिर यहां क्यों रुकोगी? कोई जरूरत नहीं है। कल मैं सबेरे जल्दी चलूंगा और तुम्हारी साइकिल लेकर तुम्हारे कारखाने के गेट पर आ जाऊंगा। तुम मध्य चीन कृषि कॉलेज की हो या तृतीय दवा कारखाने की?"

ग्वान श्या ने बताया कि वह तृतीय दवा कारखाना में काम करती है। पर वह अभी भी नहीं जाना चाह रही थी। घर न जाने का कोई और कारण नहीं था; उसे लगा कि जब तक वह युवक साइकिल ठीक न कर ले, उसे वहीं रहना चाहिए। खो थिंग ने उससे बार-बार घर चले जाने को कहा। अंत में तो उसने यह भी चेतावनी दी कि अगर वह घर नहीं गई तो वह

साइकिल ठीक नहीं करेगा। उसे भी महसूस हुआ कि यहां रुकने का कोई मतलब नहीं है।

फिर वह उसकी साइकिल से लौटी। घर लौटते समय उसके दिमाग में अनेक तरह की बातें घूम रही थीं।

अगली सुबह सवेरे ही खो थिंग उसके कारखाने आ गया और गेट के सामने खड़े होकर उसने उस लड़की की प्रतीक्षा की। साइकिल की अदला-बदली सामान्य रही। हाथ मिलाना या कागज पर हस्ताक्षर करना नहीं हुआ। थोड़ी बातचीत के साथ अदला-बदली पूरी हो गई। लड़की ने खुश और चकित होकर पूछा, "तुमने साइकिल ठीक कर दी?" युवक ने जवाब दिया, "हां।" य्वान श्या अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाह रही थी। अभी वह उसका नाम व ठिकाना पूछने ही वाली थी कि युवक मुस्कराया और अपनी साइकिल पर चढ़कर आगे बढ़ा। य्वान श्या ने पीछे से चिल्लाकर कहा, "कभी मेरी सहायता की जरूरत हो तो मुझे न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में ढूंढ़ सकते हो।"

ऊपर की प्रेम कहानी सुनकर य्वान श्या की सलाहकार ली लू ने मेज पर मुक्का मारते हुए आश्चर्य प्रकट किया। उसे लगा कि य्वान श्या लापरवाह रही। यदि उसने उसकी साइकिल का नंबर भी देख लिया होता तो उसे ढूंढ़ निकालना आसान होता और फिर दोनों की मुलाकात कराई जाती।

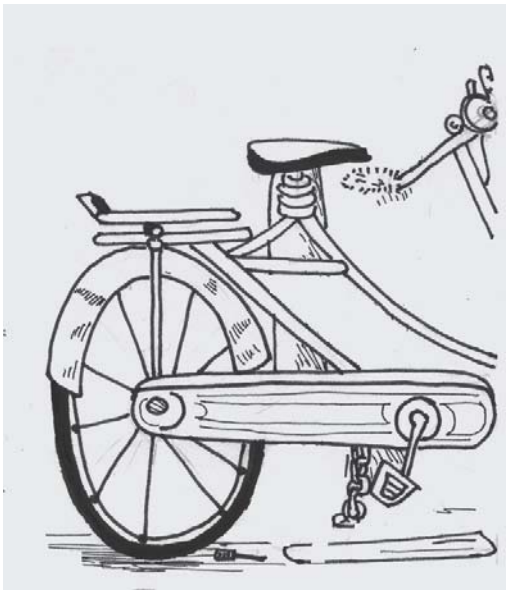

य्वान श्या ने अपने बचाव में कहा, "यदि मेरी जगह तुम होती तो तुम भी यही करती। मैं अजीब

दुविधा में थी।" यह तो अपने बचाव में उसका जवाब था, पर वह भी अफसोस कर रही थी।

3

सभी व्यावहारिक चीनी दुनिया के विभिन्न तरीकों से अच्छी तरह परिचित हैं। वे जानते हैं कि जिंदा रहने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहना आवश्यक है। 'एक-दूसरे की सहायता' उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है। खो थिंग ने य्वान श्या की साइकिल ठीक की, पर साइकिल ठीक करने से पहले उसने यह नहीं सोचा था कि उसे भी उस लड़की की सहायता की जरूरत पड़ सकती है जिससे वह अचानक मिला था। उसकी सहायता करते समय खो थिंग ने दूसरी कोई बात सोची भी नहीं थी। यह तो जब पार्टी सचिव वान ने न्यू वाटरवर्क्स कालोनी में पड़े ब्वायलर की बात की तो उसे उस लड़की का ख्याल आया।

कारखाने से लौटने के बाद वह सीधे न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी गया। न्यूवाटरवर्क्स कालोनी में तीन-चार मंजिली नई इमारतें और कुछ पुराने मकान थे। जिस लड़की का नाम भी नहीं मालूम था, उसे वह कैसे खोज निकालता? वह यह भी नहीं कह सकता था कि दक्षिण झील के किनारे एक शाम जिस लड़की की साइकिल खराब हो गई थी, वह उसे ढूंढ़ रहा है। खो थिंग की समझ में नहीं आया कि क्या करे? अचानक उसे लगा कि उसने व्यर्थ की यह मुसीबत मोल ली, वह अपने कारखाने के लिए ब्वायलर की व्यवस्था नहीं कर सकता। पर उसने हार नहीं मानी। उसे यह आशा थी कि किसी खिड़की से उस लड़की का अंडाकार चेहरा दिखाई पड़ जाएगा। आखिर शाम हो गई और वह

निराश होकर घर लौट आया।

अगले दिन उसे देखते ही पार्टी सचिव वान ने पूछा, "खो थिंग, तुम ब्वायलर की व्यवस्था करने वाले थे, उसका क्या हुआ?"

"मैंने कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली," उसने सीधा-सा जवाब दिया।

"क्या तुम किसी से मिले?" उन्होंने फिर से पूछा।

"नहीं, मैं किसी से नहीं मिला।"

पार्टी सचिव वान ने अधीर होकर कहा, "जाओ, फिर से कोशिश करो। पिछली बार तुमने किससे पूछा था? शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूं। यदि तुम्हें बात करनी नहीं आती तो मैं सिखा सकती हूं।"

युवक को सच बताने की हिम्मत नहीं हुई। वह इतना ही कह सका, "ठीक है, अपनी पाली समाप्त होने के बाद मैं जाऊंगा और फिर से कोशिश करूंगा।"

'कोशिश' शब्द सुनकर पार्टी सचिव वान और अधीर हो गईं। उन्होंने कहा, "मैं तुमसे पूछ रही हूं, यह मजाक नहीं है। यदि कोई कठिनाई हो या उन्हें कुछ देना हो तो मुझे बताओ। ठीक है, अगली बार एक पैकेट अच्छी सिगरेट लेते जाना।"

"नहीं···रहने दें···वह सिगरेट नहीं पीती!"

पार्टी सचिव कैसे सोच सकती थी कि उसके दिमाग में कोई लड़की है। तो खो थिंग में बदलाव आ गया? वह हंसी, उन्हें आशा की किरण दिखाई पड़ी।

"तो तुमने मुझ जैसी बूढ़ी औरत से भी यह बात छिपाई। अगर वह तुम पर मोहित हुई तो मैं सहायता करूंगी। ठीक है, तुम प्रेम के साथ-साथ ब्वायलर की भी बात करना। तुम उससे सहायता मांग सकते हो।"

खो थिंग ने गंभीरता से कहा, "पार्टी सचिव वान, आपको मुझसे

मजाक नहीं करना चाहिए।" उन्होंने नाखुश होकर पूछा, "भला क्यों?"

खो थिंग शरमाकर वहां से चला गया। उस दिन उसने चुपचाप काम किया और छुट्टी होने से आधे घंटे पहले दवा कारखाने के गेट पर उसकी तलाश में निकला।

उसके कारखाने के गेट पर थोड़ी देर वह खड़ा रहा। छुट्टी का सायरन बजते ही मन-मौजी युवा मजदूरों का एक समूह शोर करता हुआ बस स्टेशन की तरफ भागा। फिर साइकिल सवारों का एक समूह आया और आगे निकल गया। खो थिंग अपने विशेष उद्देश्य के कारण केवल महिला मजदूरों को देख रहा था। उसने अनेक महिला मजदूरों को देखा, पर वह नजर नहीं आई। उसने सोचा, शायद काम समाप्त होने के बाद वह कपड़े बदल रही हो। अचानक वह दिखाई पड़ी। उसने आधुनिक तो नहीं पर सुंदर कपड़े पहन रखे थे। अपनी 'अमरपक्षी-12' साइकिल लिए वह अपनी सहेलियों के साथ हंसी-मजाक करती चली आ रही थी। उसके साथ आ रही सभी लड़कियां उससे नाटी थीं। हां, वही थी। लंबी और छरहरी, अंडाकार चेहरे की सुंदर लड़की! जब वह गेट के पास पहुंची तो खो थिंग को पहले थोड़ी झिझक महसूस हुई। साहस बटोरकर वह उसे बुलाने वाला ही था कि वह अपनी साइकिल पर चढ़कर चलने के लिए तैयार हुई। इस नाजुक मौके पर खो थिंग के साहस ने साथ दिया और उसने आवाज दी, "ओ कॉमरेड!"

लड़कियों ने अपरिचित युवक को देखा और एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्कराईं। उन्हें नहीं मालूम था कि वह किसे बुला रहा है।

य्वान श्या चौंकी, पर उसने तुरंत पहचान लिया। इसी युवक के बारे में तो वह दिन-रात सोच रही थी और आभार व्यक्त करना चाहती थी। "अरे···तो तुम ही हो?" खुशी और आश्चर्य से उसका चेहरा लाल हो गया।

उसकी सभी सहेलियां अपनी-अपनी साइकिलों से उतर गईं। इस लंबी जोड़ी को देखकर सबने एक ही बात सोची। एक लड़की ने

चिढ़ाने के अंदाज में य्वान श्या से पूछा, " 'ओ, कॉमरेड!' क्या अब भी हम तुम्हारा इंतजार करें?"

निश्चित ही य्वान श्या नहीं चाहती थी कि वे रुकी रहें, पर उसने कहा, "जैसी तुम सबों की मर्जी।"

लड़कियों ने ताना मारा, "अरे, सीधी क्यों नहीं कहती कि मुझे अकेली छोड़ दो!" इतना कहकर वे मधुमक्खियों के झुंड की तरह वहां से उड़ गईं।

खो थिंग ने झेंपते हुए कहा, "मैं एक खास वजह से तुमसे मिलने आया हूं···"

ऐसी परिस्थिति में इन बातों का कोई औचित्य नहीं होता, फिर भी युवक की झेंप देखकर उसने कहा, "उसकी चिंता मत करो, आओ इस रास्ते से चलें।"

वे अपनी साइकिल से विपरीत दिशा में निकले। वे आपस में बातें करते जा रहे थे।

"मैं तुम्हें खोजने न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी गया था।"

"कब?"

"कल, छुट्टी होने के बाद।"

"कल शाम मैं घर पर ही थी।"

"उस बड़ी कॉलोनी में कई इमारतें हैं। मैं···"

"दूसरी इमारत के दूसरे गेट से घुसने पर दूसरी मंजिल पर मेरा फ्लैट है। इसे याद रखना बड़ा आसान है। वहां केवल मेरा नाम पूछो तो भी कॉलोनी वाले बता देंगे। सभी मुझे जानते हैं।"

इस बार य्वान श्या का जवाब सकारात्मक और निश्चित था।

"तुम्हारे माता-पिता वाटरवर्क्स के पुराने मजदूर हैं क्या?"

"हां, पिता जी को पुराना मजदूर कहा जा सकता है। मां पहले

एक 'छोटे कारोबार' में काम करती थी। बाद में वह भी वाटरवर्क्स में आ गई।"

'छोटे कारोबार' के उल्लेख से खो थिंग को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी कमजोर नब्ज पर उंगली रख दी। अगर वह 'छोटे कारोबार' में नहीं होता तो उसे सहायता मांगने के लिए नहीं आना पड़ता। उसने थोड़ी परेशानी महसूस की, पर झिझकते हुए पूछा, "तो तुम्हारे पिता पुराने मजदूर हैं। उनका पद क्या है? किस चीज के प्रभारी हैं?"

"सब कुछ और कुछ भी नहीं हैं!" य्वान श्या ने शरारत से कहा।

"तुम्हारा मतलब वह मजदूर नहीं, कार्यकर्ता हैं?" खो थिंग ने पूछा।

खो थिंग के इस सवाल से य्वान श्या कुछ नाराज हो गई। उसने गुस्से में पूछा, "मेरे पिता कार्यकर्ता हैं या मजदूर हैं, इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

लड़की ने अचानक यह सवाल पूछ दिया था, खो थिंग ने ईमानदारी के साथ सीधा जवाब दिया, "मेरा अनुमान था कि तुम कार्यकर्ता परिवार की हो और तुम्हारे पिता किसी ऊंचे पद पर हैं। मेरा यह मतलब नहीं था कि पुराना मजदूर…"

यह सुनकर य्वान श्या ने सोचा, 'तो तुम भी औरों की तरह ही हो!' उसकी उस युवक में रुचि समाप्त हो गई, उसने अपना सिर झुकाया और अचानक तेज पैडल मारने लगी। कुछ ही क्षणों में वह खो थिंग से आगे निकल गई। जब खो थिंग ने उसके पास आकर कुछ कहना चाहा, तो उसने इस तरह से अपना हाथ हिलाया मानो कह रही हो "फिर मिलेंगे" (या कभी नहीं मिलेंगे) और तेजी से साइकिल चलाने लगी।

'मैं अंधी थी…,' लड़की ने सोचा। वह उदास और परेशान दिख रही थी। चूंकि वह वसंत में खो थिंग से अचानक मिली थी और ली लू की आलोचना उसने स्वीकार की थी, इसलिए वह युवक उसके

दिल में घर बनाने लगा था। काम से घर लौटते समय जब भी वह सहेलियों से अलग होती, वह झील के किनारे उस यादगार स्थान पर जरूर जाती। उसे उम्मीद थी कि वह युवक उसे वहां मिलेगा और वह उसे तुरंत पहचान लेगी। वह धीमी आवाज में तब उससे कहती, "देखो, मेरी आंखें कितनी तेज हैं!" पर वह सपना ही रह गया। पिछली बातों की याद और लगातार मिली निराशा ने उसके प्रथम प्रेम की आग तेज ही की थी। उसे ऐसा लगता था कि दूसरे लोग उसके दिल की गुप्त लालसा के बारे में जानते हैं। पर वह स्वयं को समझा लेती थी कि वह तो केवल आभार व्यक्त करने के लिए मिलना चाहती है। पर आज की अप्रत्याशित मुलाकात ने उसकी खुशी के साथ धोखा किया था और उस यादगार स्थान पर मंडराने के उसके सारे बहाने बेकार सिद्ध हो गए थे!

ग्वान श्या तेजी से साइकिल चलाए जा रही थी। थोड़ी ही देर में वह यादगार स्थान दिखा। उसके दिल में कसक-सी उठी, "जब तुम मेरी साइकिल ठीक कर रहे थे, उस समय तुम कितने सीधे और गंभीर लग रहे थे, पर आज तुम भोंड़े लग रहे हो···क्या मैं सचमुच अंधी थी?"

पीछे-पीछे आ रहा खो थिंग इस बात से परेशान था कि उसकी किस बात से लड़की नाराज हो गई। क्या उसने कोई उल्टी-सीधी बात कह दी? फिर भी ब्वायलर के लिए, और यह भी कहा जा सकता है कि क्रांति के लिए, प्रेम के लिए नहीं, वह इतनी जल्दी हार मानने वाला नहीं था। उसने भी साइकिल तेज की और पास आता हुआ बोला, "एक मिनट रुकना···मुझे तुमसे एक जरूरी बात करनी है···"

भगवान को खुश करने से आसान लड़की खुश करना था। उसकी व्याकुल आवाज में प्रकट ईमानदारी या प्रथम मुलाकात से दिल में उत्पन्न मधुर इच्छाओं की याद के कारण, या फिर अपना आभार व्यक्त करने के लिए, वह उस यादगार स्थान पर पहुंचने के साथ ही अपनी साइकिल से उतरी। खो थिंग ने भी अपनी साइकिल रोकी।

लड़की को नाराज हुआ देखकर खो थिंग ने पुरानी बात छोड़ दी और सीधे ब्वायलर के संबंध में बात की।

उसकी बात सुनकर उसके दिल से बोझ उतर गया। उसे हंसी आई कि इस सीधे युवक को यह नहीं मालूम कि वह सहप्रबंध य्वान की बेटी है। इसलिए उसने प्यार से कहा, "चिंता मत करो। मेरे ऊपर छोड़ दो!"

"तुम्हारे ऊपर छोड़ दूं?···क्या तुम निश्चित हो? मैंने सुना है कि सहप्रबंधक य्वान से मिलना मुश्किल काम है। क्या तुम्हारे पिता उन्हें अच्छी तरह जानते हैं?"

खो थिंग के सवाल से उसे हंसी आई और गुस्सा भी आया। उसने जवाब दिया, "हां, मैंने कहा न, मेरे ऊपर छोड़ दो। और क्या चाहते हो?"

खो थिंग ने आगे कहा, "ठीक है, अगर बात बन जाती है तो मैं कारखाने से परिचय-पत्र लिखवाकर ले आऊंगा।"

"ठीक है, ठीक है···और कोई बात करो!" य्वान श्या ने उसकी बात समाप्त कर दी।

उसे लगा कि सिर्फ ब्वायलर की बात करना तो इस अच्छे समय को बर्बाद करना है।

4

न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में घुसते ही खो थिंग ने कोने में पड़ा ब्वायलर देखा। उसने जेब से स्टील टेप निकालकर उसे नापा। य्वान श्या से नहीं रहा गया, उसने कहा, "यदि ब्वायलर ठीक तुम्हारी जरूरत के अनुसार भी हो तो क्या होता है, तुम्हें क्या मालूम कि वे तुम्हें देंगे या नहीं?" खो थिंग ने झेंपकर स्टील टेप जेब में रखा और य्वान श्या के पीछे-पीछे एक इमारत में घुसा।

वे दूसरी इमारत के दूसरे गेट से घुसकर दूसरी मंजिल पर आए। खो थिंग आसपास के माहौल से बेपरवाह था। वह हिसाब लगा रहा था

कि इस ब्वायलर से कितनी मात्रा में वाष्प बन सकेगा। य्वान श्या ने धक्का देकर दरवाजा खोला और उसे अंदर बुलाती हुई बोली, "यह सहप्रबंधक य्वान का घर है।" खो थिंग ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। वह घबरा गया और उसने चौंककर पूछा, "तुमने तो कहा था कि इस संबंध में पहले अपने पिता से बात करोगी?" य्वान श्या ने किसी अनुभवी अभिनेत्री की तरह जवाब दिया, "एक ही बात है।"

ड्राइंग रूम में तीन-चार व्यक्ति बैठे थे और पूरा कमरा सिगरेट के धुंए से भरा था। य्वान श्या और खो थिंग के आने से सबने बातें बंद कर दीं और उनकी तरफ देखा। य्वान श्या ने हाथ से हवा करते हुए भौंहें चढ़ाकर कहा, "हद है!" वह अपने घर आने वाले अनिमंत्रित मेहमानों को पसंद नहीं करती थी। एक प्रौढ़ उम्र का मेहमान उठा और बोला, "य्वान साहब, मैं आपकी सलाह के

अनुसार ही करूंगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि समय आने पर आप अवश्य मदद करेंगे।" दूसरे अन्य दो व्यक्ति भी उठे और बोले, "ग्वान साहब, आपकी मदद के बिना हमारी समस्या नहीं सुलझेगी। हो सकता है, हम फिर से आकर आपको तकलीफ दें।" इस बीच खो थिंग ने सहप्रबंधक ग्वान को अच्छी तरह देख लिया था। वह नाटे व्यक्ति थे, पर उनका गंजा सिर और चमकदार माथा उनकी गरिमा बढ़ाता था।

सभी मेहमानों के जाने के बाद ग्वान श्या ने खो थिंग से कहा, "इसे अपना ही घर समझो और आराम से बैठो। मुझे एक जरूरी काम है, मैं जल्दी ही लौट आऊंगी।" यह कहकर वह दरवाजे से बाहर निकली।

ग्वान श्या के जाने के बाद खो थिंग को थोड़ी घबराहट हुई। उसे नहीं मालूम था कि लड़की क्या चाल चल रही है? कहीं सहप्रबंधक ग्वान के स्वभाव के डर से ही तो वह केवल परिचय कराने के बाद जानबूझकर नहीं निकल गई?

"सहप्रबंधक ग्वान··· ग्वान साहब··· माफ करें, आपको तकलीफ···"

"नहीं·· नहीं··· तकलीफ की क्या बात है? बैठो, बातें करते हैं।"

सहप्रबंधक ग्वान ने लंबे युवक का उत्साह से स्वागत-सत्कार किया। उन्होंने मुस्कराते हुए उससे मेज के पास रखी बेंत की कुर्सी पर बैठने को कहा और एक प्याली चाय दी। खो थिंग ने महसूस किया कि सहप्रबंधक ग्वान इतने बुरे स्वभाव के नहीं हैं, जितना लोग कहते हैं। सहप्रबंधक ग्वान खिड़की के पास की कुर्सी पर आराम से बैठे और उससे बातें करने लगे।

"तुम दोनों एक-दूसरे को बहुत दिनों से जानते हो, ठीक है?"

"नहीं, हम एक-दूसरे को पहले नहीं जानते थे।"

"अच्छा, तुम्हारा परिचय कैसे हुआ?" सहप्रबंधक ग्वान ने युवक की लंबाई देखकर माना कि यह युवक ग्वान श्या के योग्य है।"

खो थिंग ने शरमाते हुए धीमे से जवाब दिया, "बस, एक संयोग था।"

सहप्रबंधक य्वान ने इस संबंध में और कोई सवाल नहीं पूछा। उन्होंने मेज पर रखी एक छोटी शीशी उठाई और उसमें से कुछ गोलियां निकालकर पानी के साथ उन्हें निगला। फिर अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "तुम दोनों पहले नहीं मिले थे, कोई बात नहीं, पर आगे बार-बार मिलोगे और एक-दूसरे को अच्छी तरह से समझ लोगे।"

खो थिंग को लगा कि कहीं गलतफहमी हो गई है। उसका चेहरा लाल हो गया और दिल तेजी से धड़कने लगा। उसे याद आया कि रास्ते में जब उस लड़की से ब्वायलर की बात कर रहा था तो वह बार-बार जोर दे रही थी, "मेरे ऊपर छोड़ दो!" और घर में इस तरह घुसी जैसे उसी का घर हो। क्या वह सहप्रबंधक य्वान की बेटी है? हां, दोनों का कुलनाम तो एक ही है। पर उसने जब नाटे सहप्रबंधक को देखा तो उसे संदेह हुआ। फिर भी उसने सोचा, वंश का क्रम भी कभी-कभी सही नहीं होता और आज तो ऐसा ही लग रहा है। पर उसे इससे क्या? उसे तो ब्वायलर से मतलब है। वह

मिल जाए, बस। कितना अच्छा होता यदि य्वान श्या सहप्रबंधक य्वान की बेटी होती!

कुछ सोचकर उसने यह बात सहप्रबंधक य्वान से नहीं पूछी और सीधे अपने काम की बात पर आ गया, "य्वान साहब, बात यह है... हमारे कारखाने को एक ब्वायलर की जरूरत है... हां, वही जो आपकी कॉलोनी में पड़ा है। मैंने उसे नाप लिया है और मार्का भी अच्छा है। वह ठीक हमारी जरूरत के मुताबिक है। य्वान श्या मुझे यहां ले आई, क्या आप अपनी सहमति जाहिर कर हमारी मदद करेंगे?"

बात बिगड़ गई। अब तक सहप्रबंधक य्वान ससुर बनने का सपना देख रहे थे, पर अब अचानक प्रबंधक बन गए। उन्हें गुस्सा आया। "फिर वही ब्वायलर" वह थोड़ी देर तक चुप रहे।

खो थिंग ने आग्रह किया, "हमारे छोटे कारखाने की मदद कीजिए।"

सहप्रबंधक य्वान ने पूछा, "तुम्हारा कारखाना क्या उत्पादित करता है?"

"हमारा प्राथमिक उत्पादन 'चिरनूतन लेप' है।"

"चिरनूतन... लेप? तो तुम यह बनाते हो? क्या यह सचमुच अच्छा है?" सहप्रबंधक ने पूरी रुचि के साथ पूछा। उनकी उंगलियां मेज पर रखी शीशी से खेल रही थीं।

"यह बुरा नहीं है। दूसरे शहरों और सेना से हमें काफी आर्डर मिलते हैं।"

"ओह, यह तो पक्का सबूत है। पर मुझे नहीं लगता कि वह इतना प्रभावशाली है।"

"रासायनिक शोध संस्थान ने इसकी जांच और प्रशंसा की है। दूसरे, हमारे ग्राहक भी संतुष्ट हैं।"

सहप्रबंधक य्वान ने मेज से शीशी उठा ली और उसे देखते हुए पूछा, "यह जीवनवर्द्धिनी गोलियों की तुलना में कैसा है?"

"वह तो बिलकुल अलग चीज है," खो थिंग ने जवाब दिया।

सहप्रबंधक य्वान दिल खोलकर हंसे। अपना सिर पीछे की तरफ झुकाकर उन्होंने अपना भार कुर्सी की पिछली टांगों पर डाला। वह बोले, "मुझे तो सब एक ही से लगते हैं। मैंने य्वान श्या के दवा कारखाने की जीवनवर्द्धिनी गोलियां खाईं, पर देखो और भी गंजा होता जा रहा हूं।" फिर दिखाने की गरज से उन्होंने अपने सिर पर हाथ फेरा। " 'जीवनवर्द्धिनी गोली', 'चिरनूतन लेप' ये बड़े मोहक नाम हैं। उनके सेवन या प्रयोग से कोई हानि नहीं होती। तुम सहमत हो कि नहीं?"

थोड़ी देर के बाद सहप्रबंधक पहले की अवस्था में आ गए। कुर्सी की टांगें सीधी हो गईं और उनके हाथ भी सिर से नीचे आ गए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "अब देखो क्या करना चाहिए। तुम कारखाना लौटकर अपने पार्टी सचिव और कारखाना निदेशक से पूछो कि क्या वे अपने कारखाने का उत्पाद हमें मुहैया करा सकते हैं। मैं अपने कारखाने में दूसरे प्रधानों से ब्वायलर के बारे में बात कर सकता हूं।"

अचानक खो थिंग ने महसूस किया कि सहप्रबंधक य्वान रबड़ की आयु बढ़ाने के काम आने वाला 'चिरनूतन लेप' को जीवनवर्द्धिनी दवा समझकर उससे ऐसी मांग कर रहे हैं। उसकी हंसने की इच्छा हुई, पर साहस नहीं हुआ। उसने सोचा यदि वह सच बता दे तो सहप्रबंधक मूर्ख सिद्ध होंगे। इसलिए उसने होशियारी से काम लिया और एक बहाना गढ़ा, "अभी तक हमने व्यक्तिगत ग्राहकों को नहीं बेचा है, क्योंकि इसकी कीमत बहुत ज्यादा है। दूसरे, यह…"

सहप्रबंधक य्वान उसके गोलमटोल जवाब से चिढ़ गए और त्योरियां चढ़ाकर बोले, "हां, आजकल हम लोग सारे काम नियम के अनुसार करते हैं। अच्छा तुम्हारे कारखाने का क्या नाम है?"

"ऊछांग नगर क्षेत्र का चिंगारी रासायनिक कारखाना" युवक ने जवाब दिया।

सहप्रबंधक ने अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा, "ऊछांग नगर क्षेत्र में इस नाम का कोई कारखाना है क्या?"

"दरअसल इसका पूरा नाम, सिंह गली का चिंगारी रासायनिक कारखाना है, यह ऊछांग नगर क्षेत्र में ही है।"

"ओह, एक छोटा कारोबार है?" सहप्रबंधक ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा। "अब हमें बिलकुल नियम के अनुसार काम करना चाहिए। मैं ही यहां का अकेला प्रभारी नहीं हूं, इसलिए सिर्फ मेरी सहमति से कुछ नहीं हो सकता··· है कि नहीं? और फिर हमें स्वयं उस ब्वायलर की जरूरत है··· और कुछ?"

उन्होंने बातचीत खत्म करने के लहजे में अपनी बात कही थी। खो थिंग ने अचानक सिहरन महसूस की, उसका पूरा बदन मलेरियाग्रस्त रोगी की तरह कांपने लगा। उसने स्वयं को अपमानित महसूस किया। उसे यह भी अफसोस हुआ कि उसने व्यर्थ ही कारखाने में धाक जमाने की कोशिश की।

"नौजवान, तुम्हें अनुभव नहीं है। शायद तुम इसके पहले कभी व्यापार की बात करने नहीं गए। अब से कभी भी कहीं बात करने जाओ तो अपने साथ परिचय-पत्र लेकर जाओ।" सहप्रबंधक उठकर खड़े हो गए और जबरन मुस्कराने की कोशिश की।

यह गंजा नाटा आदमी! मूर्ख! लालची! दंभी! अज्ञानी! खो थिंग बोलने ही वाला था। वह अपने गुस्से को दबा रहा था··· छोटा कारोबार··· तो क्या हुआ? क्या छोटे कारोबारों ने बिना सरकारी मदद के लाखों-करोड़ों रुपये सरकार के लिए नहीं कमाए हैं? सच यह है कि वह भी पहले छोटे कारोबार को तुच्छ समझता था। काम के बाद उसने विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी की थी और पार्टी सचिव वान से इजाजत मांगी थी। उसके लिए छोटे कारोबार से निकलने का

यह एकमात्र रास्ता था। पार्टी सचिव वान ने तब कहा था, "हमारे पुराने मजदूरों ने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया, तुम्हें उड़ना सिखाया। अब तुम्हारे डैने मजबूत हो गए हैं तो तुम उन्हें छोड़कर उड़ जाना चाहते हो। क्या तुम्हें हमें छोड़कर जाने का कोई दुख नहीं है?" उन्होंने उसांस भरी और आगे कहा, "यदि तुम जोर डालोगे तो मैं चाहकर भी तुम्हें नहीं रोक सकूंगी। पूरे देश के हित की उपेक्षा कर केवल अपनी इच्छाओं का ख्याल रखना स्वार्थ है। संक्षेप में, मैं तुम्हारा भविष्य खराब नहीं करूंगी। पर मैं उम्मीद करती हूं कि अपनी जगह किसी और के आ जाने तक तुम इंतजार करोगे।" युवक का दिल पसीज गया, पार्टी सचिव की बातें उसे छू गईं और वह रोया। भावना और व्यक्तिगत भविष्य की दुविधा में भावना की जीत हुई। वह पुराने उस्तादों और पार्टी सचिव का सिर नहीं झुकने देगा। उसे अपने नेताओं के प्रति सहानुभूति हुई। पार्टी सचिव वान की उम्र घर पर बैठकर पोते की देखभाल करने की है, पर वह साढ़े चार बजे सुबह उठती हैं और तीन बसें बदलकर शहर के उत्तरी हिस्से से दक्षिणी हिस्से में आती हैं। वह इतनी मेहनत क्यों करती थीं? वैसे पैंसठ वर्षीय कारखाना निदेशक रोजाना लगभग 30 किलोमीटर पुरानी टूटी-फूटी साइकिल से आते-जाते हैं। वह इतनी मेहनत क्यों करते थे? सहप्रबंधक य्वान को देखने के बाद पार्टी सचिव वान और कारखाना निदेशक के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ गई। वे उसकी नजर में पहले की अपेक्षा काफी बड़े हो गए। वे कितने अच्छे थे! अपने मजदूरों से कितना मधुर व्यवहार करते थे!

खो थिंग भी खड़ा हो गया, सहप्रबंधक य्वान के सामने उसने स्वयं को भी काफी लंबा महसूस किया। इस छोटे कमरे में उसने बहुत कुछ सीखा और साथ ही उसे अच्छा सबक मिला था, अपनी ईमानदारी की अधिक इज्जत करने का। वह पूछना चाहता था, "सहप्रबंधक! क्या ब्वायलर आपकी निजी संपत्ति है या फिर चीन लोक गणराज्य की संपत्ति है?"

खो थिंग ने सहप्रबंधक य्वान को घृणा से देखा और एक-एक

शब्द पर जोर देते हुए बोला, "आपके सुझाव के लिए धन्यवाद, ख्वान साहब!" इसके बाद वह कमरे से निकल गया।

वह तेज कदमों से सीढ़ियों से उतरा। वह अपनी साइकिल का ताला खोलने ही वाला था कि किसी ने उसका हाथ पकड़ा। उसने पलटकर देखा, एक औरत टोकरी भर खाने का सामान लिए खड़ी थी।

"अरे, भागे क्यों जा रहे हो?"

खो थिंग की समझ में नहीं आया कि क्या बात है।

"देखो, मैं कुछ खाने का सामान खरीदकर लाई हूं। जब ख्वान श्या ने बताया कि तुम आए हो तो मैं दौड़ी-दौड़ी बाजार गई। अभी न जाओ, वह जल्दी ही आ जाएगी। उसे काफी समय हो गया है। बस, आ ही रही होगी। तुम थोड़ी देर और रुको, ऊपर चलो न!"

लंबी, स्पष्ट और गर्मदिल औरत की सूरत ख्वान श्या की सूरत से मिल रही थी। पर उसका अपमान हुआ था, इसलिए उसने सोचा कि तीनों एक ही जैसे हैं और मूर्ख बना रहे हैं। उसने लापरवाही से कहा, "नहीं, मैं एक जरूरी चीज लेकर नहीं आया हूं।"

उसका आशय न समझकर श्रीमती ख्वान ने पूछा, "क्या मतलब? तुम्हें क्या लाने की जरूरत है? तुम बगैर कोई झंझट किए आए, यह तो बड़ी खुशी की बात है। तुमने मुंह भी जूठा नहीं किया और चले जा रहे हो। नहीं, यह नहीं होगा। ख्वान श्या लौटकर मुझे दोष देगी। अगर उस शाम तुमने उसकी साइकिल ठीक नहीं की होती तो क्या हुआ होता, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती।"

खो थिंग ने औरत के हाथ से अपना हाथ छुड़ाया और कहा, "अभी मैं नौजवान हूं। मुझे सारे तौर-तरीके नहीं मालूम हैं। मैं अपना परिचय-पत्र नहीं ले आया था!" वह साइकिल पर चढ़ा और जाने के लिए बढ़ा।

श्रीमती ख्वान ने उसे जाते हुए देखा। उन्हें स्वयं नहीं मालूम कि उन्होंने क्या महसूस किया। वह उन्हें सुशील युवक लगा। जरूर ख्वान

श्या के पापा ने किसी बात से उसे नाराज कर दिया होगा। परिचय-पत्र क्या बकवास है? उन्हें मालूम ही नहीं कि वह क्या पूछ बैठे···

5

य्वान श्या सचमुच ही किसी काम से चली गई थी। वह ली लू को फोन किए बिना सीधे उसके घर गई। ली लू को जब युवक के आगमन का पता चला तो वह झट से तैयार हो गई। वह य्वान श्या के साथ लौटी।

दो 'अमरपक्षी' साइकिलें अगल-बगल में चली जा रही थीं, दोनों साइकिलों पर सवार लड़कियां बातें करती और हंसती जा रही थीं। साइकिलें इतनी तेज चल रही थीं कि रास्ते के पेड़-पौधे, सड़क की बत्तियां, पैदल चलने वाले सभी पीछे छूटते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे दोनों संसार की सबसे अधिक खुश और लंबी लड़कियां हैं। सुनहरा भविष्य उन्हें संकेत दे रहा था।

हमेशा की तरह ली लू ने घर में घुसने से पहले चेतावनी दी, "चाचा-चाची, मैं फिर से आ गई हूं। क्या मेरा स्वागत है?"

पर कोई उसके स्वागत के लिए नहीं आया, वह स्वयं ही अंदर घुसी। ड्राइंग रूम किसी युद्ध मैदान की तरह लग रहा था। य्वान चाचा किसी घायल बंदी की तरह कुर्सी पर लुढ़के पड़े थे। य्वान चाची उनके सामने विजयी योद्धा की तरह खड़ी थीं।

"वह युवक कहां गया है? चला गया?"

चाची ने क्रोध में कहा, "इनसे पूछो!"

सहप्रबंधक ने दया की भीख मांगी, "उसने हमारी मदद की, इसलिए अवश्य ही मैं भी उसकी मदद करूंगा! तुम लोग और क्या चाहती हो?"

श्रीमती य्वान ने कमुक के आ जाने से दोहरी ताकत से आक्रमण किया, "मुझे तुम्हारे ब्वायलर की परवाह नहीं, मैं उस युवक को यहां देखना चाहती हूं।"

उनके पति ने कहा, "मैं उसे कहां से ले आऊं? कल तुम उसके 'छोटे कारोबार' फोन करके कह देना कि मैं सहमत हूं।"

'छोटा कारोबार' शब्द सुनकर ली लू का दिल बैठ गया। वह य्वान श्या से अकेले में इस बारे में पूछना चाहती थी। उसने य्वान चाची को शांत कर खाना बनाने के लिए भेजा। य्वान चाची भी इतनी जल्दी शांत नहीं हुईं। उन्होंने ली लू का सहारा लेकर अपने पति को लंबी-चौड़ी सुनाई और उनके स्वभाव की आलोचना की। उन्होंने उस युवक से परिचय-पत्र क्यों मांगा? उन्होंने घोषणा की कि वह य्वान साहब के लिए खाना नहीं बनाएंगी। उन्होंने कहा, "इस बूढ़े को भूखा मरने दो।" सहप्रबंधक ने इस नाजुक मौके पर चुप रहना ही उचित समझा और हार मान ली, वर्ना बात और बढ़ जाती और ली लू को बुरा लगता। उन तीनों में वह सबसे नाटे और अभागे थे। पर उनकी पत्नी ने तब तक भाषण देना बंद नहीं किया, जब तक वह स्वयं न थक गईं।

य्वान श्या के कमरे में आकर ली लू ने पूछा, "बताओ, क्या वह छोटे कारोबार में काम करता है?"

य्वान श्या ने उसका प्रश्न टालते हुए कहा, "इससे क्या फर्क पड़ता है? वह छोटे कारोबार में करता है, क्या इसलिए हमें उसे तुच्छ समझना चाहिए? दूसरे दर्जे का नागरिक?"

ली लू ने कहा, "नहीं, बिलकुल नहीं। मुझ पर नाराज मत हो। पर मुझे डर है कि चाचा-चाची आपत्ति करें?"

निस्संदेह य्वान श्या ली लू पर अपना गुस्सा नहीं निकाल रही थी। साथ ही वह अपनी सहेली को सब कुछ समझाना जरूरी नहीं समझ रही थी। उसने कहा, "हाथ में लौह कटोरा आ जाने के बाद मेरे प्रिय पिता उन दिनों को भूल गए, जब वह टूटी टोकरी लिए खाने की भीख मांगा करते थे। यदि उनके दिल में छोटे कारोबार के प्रति इज्जत होती तो वह मां का स्थानान्तरण राज्य संचालित कारखाने में नहीं करवाते। इसलिए जब मैं किसी के मुंह से नौकरशाही और बड़े अधिकारियों की आलोचना सुनती हूं तो मुझे एक साथ खुशी और दुख का अनुभव होता है। मुझे दुख इस बात का होता है कि मैं ऐसी आलोचना करने में असमर्थ हूं। मुझसे वह हक छीन लिया गया है।"

य्वान श्या ने ली लू के सामने अपनी स्पष्ट राय रखी। उसने बताया कि यदि एक मनुष्य अच्छे चरित्र का है तो हमें उसके पद और प्रतिष्ठा की चिंता नहीं करनी चाहिए। ली लू चिंगारी कारखाने के बारे में विस्तार से जानना चाहती थी। य्वान श्या को जितना मालूम था और खो थिंग ने उसे जो बताया था, उसने सब कुछ ली लू को बताया। उसने कहा कि चिंगारी कारखाने के फेरिक क्लोराइड की मांग बढ़ी है, ऊहान लोहा और इस्पात कंपनी बड़ी मात्रा में उनसे फेरिक क्लोराइड खरीदना चाहती है। पश्चिमी जर्मनी के एक विशेषज्ञ ने उन्हें बताया कि यदि वे उत्पादन नहीं कर सकते तो उसे पश्चिमी जर्मनी से आयात कर सकते हैं। पर इस छोटे कारोबार ने किसी तरह इसके उत्पादन में सफलता हासिल की है। य्वान श्या का अनुराग देखकर ली लू अधिक देर तक तटस्थ नहीं रह सकी। जल्दी ही दोनों सहमत हो गईं कि वह सही आदमी है। उन्होंने तुरंत आगामी कार्यवाही की एक योजना बनाई।

6

अगले दिन सुबह य्वान श्या और ली लू दोनों चिंगारी रासायनिक

कारखाना गईं। कारखाने में ऐसी कोई खासियत नहीं थी। पर इस दृष्टिकोण से देखने पर कि अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कारखाना आगे बढ़ रहा है, कारखाने की महत्ता मालूम हो सकती थी। कारखाने के गेट के बाहर से ली लू ने सब कुछ देख लिया। रात में य्वान श्या की बतायी बात याद आई कि कैसे वे आधुनिक इस्पात कारखाने के लिए फेरिक क्लोराइड बनाने की कोशिश में लगे हैं। उसने कारखाने के अन्य मशहूर उत्पादों के बारे में भी सोचा। अब कारखाने की हालत अपनी आंखों से देखने के बाद वह प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकी, "कौन सोच सकता था कि यह छोटा कारखाना इतना सफल होगा।"

य्वान श्या ने इशारा किया, "वह आ रहा है।"

ली लू ने देखा, वह युवक साइकिल पर चला आ रहा था। वह लंबा और सुंदर था। पहली नजर में उनकी राय अनुकूल बनी, वह किसी भी तरह उसके दोस्त से कम नहीं था। उसने खुशी के साथ दूसरी टिप्पणी की, "कौन सोच सकता था कि यह संभव है!" उसने य्वान श्या की पसंद की सराहना की। उसका गोल चेहरा खुशी से और गोल हो गया।

"साहस, हठ और उत्साह से काम लो," उसने य्वान श्या को दबी आवाज में समझाया।

उसकी तीनों सलाहें काम नहीं आईं। य्वान श्या माफी मांगने आई थी और कुछ दूसरी बात भी सोच रही थी। वह प्रायः आराम से विश्वास के साथ काम लेती थी, पर अब पास आते ही वह क्षुब्ध हो गई।

खो थिंग भी बदला हुआ था। सहप्रबंधक के छोटे ड्राइंग रूम में हुई अग्नि-परीक्षा के बाद उसके व्यवहार में ठंडापन आ गया था, उसकी आंखें स्थिर थीं और वह आने वाली हर मुसीबत का मुकाबला करने को तैयार था। य्वान श्या को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। वह

यहां क्यों आई है और वह भी एक सहेली के साथ? उसने खोजकर तीखे शब्द और आक्रामक मुहावरे निकाले ताकि उन्हें ताना मार सके। वह क्या सलाह देने आई हैं? यदि वह अपने पिता के लिए 'चिरनूतन लेप' खरीदने आई है तो वह उसकी इच्छा पूरी करने में मदद करेगा।

ग्वान श्या ने आगे बढ़कर कहा, "बड़े सबेरे आ गए।"

"तुम···तुम तो मुझसे भी पहले आई हो," खो थिंग ने दो टूक जवाब दिया। लेकिन उसे झगड़ा करने की आदत नहीं थी। और इसके अलावा ग्वान के सौंदर्य और लाज का उसपर असर हुआ, वह इतना कठोर हृदय नहीं था कि उसकी अवहेलना करता। सभी तीखे और आक्रामक शब्द वह भूल गया।

थोड़ी देर तक खामोशी बनी रही। अंतर्राष्ट्रीय वार्ताओं में ऐसी खामोशी बड़ी बात नहीं है, कभी-कभी वर्षों कोई बातचीत नहीं होती। पर ऐसे मौके पर थोड़ी देर की खामोशी भी तनाव बढ़ा देती है। खामोशी युद्ध से अधिक असहनीय हो गई।

पार्टी सचिव वान आधा भठूरा हाथ में लिए आ रही थीं। उन्होंने दूर से ही पूछा, "खो थिंग, क्या ब्वायलर मिला?"

"वे परिचय-पत्र चाहते हैं!" खो थिंग ने जवाब दिया। उसने ग्वान श्या पर व्यंग्य करते हुए यह बात कही।

"अगर तुमने सारी व्यवस्था कर ली है तो परिचय-पत्र लिखने में मुझे कितना समय लगेगा।" परिस्थिति से अपरिचित पार्टी सचिव वान बहुत खुश दिखीं। पास आने पर उन्होंने प्रशंसा के स्वर में पूछा, "ये दो लड़कियां कौन हैं?"

ली लू ने तुरंत स्थिति संभालते हुए कहा, "सहप्रबंधक ग्वान ने हमें यहां भेजा है। कल कॉमरेड खो के लौटने के बाद सहप्रबंधक ग्वान ने कहा, "उसे बार-बार यहां आने-जाने की क्या जरूरत है। हम सभी चार आधुनिकीकरण को सफल बनाने में व्यस्त हैं।' इसलिए उन्होंने स्वयं यह आदेश लिखकर हमें यहां पहुंचाने के लिए दिया।"

य्वान श्या ने अपने पिता की गलती ढंकने के लिए ली लू की कोशिश की प्रशंसा की। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। सच यह था कि ब्वायलर की समस्या तुरंत नहीं सुलझाई गई तो संभव था कि किसी दूसरे कारखाने को बेच दिया जाता। ली लू य्वान श्या के दोस्त को देखना भी चाहती थी ताकि वह दोस्त के निजी सलाहकार की भूमिका अच्छी तरह अदा कर सके। इसलिए दोनों ने सहप्रबंधक य्वान को आदेश लिखने पर बाध्य किया था।

पार्टी सचिव वान कृतज्ञ थीं। वह दोनों लड़कियों को अपने दफ्तर में बुलाकर बात करना चाहती थीं, पर उन्हें डर था कि उनके तेल लगे हाथ से लड़कियों के कपड़े गंदे हो जाएंगे। ली लू ने कहा कि कोई बात नहीं है और वह पार्टी सचिव वान के साथ दफ्तर में आई। ली लू ने पार्टी सचिव वान को कल की घटना उचित रूप से बताई और साथ ही खो थिंग के बारे में विशेष जानकारी हासिल कर ली। पार्टी सचिव वान अत्यंत खुश थीं, उन्होंने मुस्कराकर बाहर खड़ी य्वान श्या को बार-बार देखा। उनके कारखाने की कुछ लड़कियों ने तृतीय दवा कारखाने के मजदूरों से शादियां की थीं। अब तृतीय दवा कारखाने की इतनी

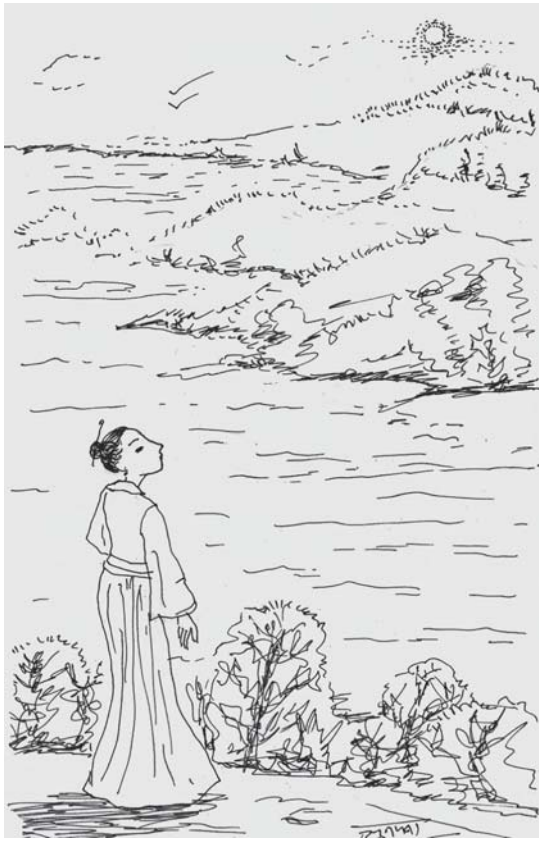

सुंदर लड़की, और वह भी सहप्रबंधक य्वान की बेटी, उनके छोटे कारोबार में स्वयं आई थी। इससे उनकी प्रतिष्ठा में इजाफा हुआ था। उन्होंने सहप्रबंधक य्वान के प्रति आभार व्यक्त किया; उन्होंने केवल ब्वायलर देकर ही मदद नहीं की थी, बल्कि दहेज में एक सुंदर लड़की भी दी थी।

"हमारे छोटे कारोबार को तुच्छ न समझें, यहां तक कि सहप्रबंधक य्वान भी इसके बारे में अच्छी राय रखते हैं।" उन्होंने संतोष की सांस ली।

य्वान श्या ने खो थिंग से माफी मांगी। पर खो थिंग अभी भी नाराज था। उसने कोई बात नहीं की। तभी पाली आरंभ होने की घंटी बजी और खो थिंग अपने काम पर चला गया। य्वान श्या नहीं जान पाई कि उसने उसे माफ किया या नहीं।

उस शाम दक्षिण झील के किनारे पर य्वान श्या प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसी स्थान पर खड़ी थी, जहां उसकी साइकिल खराब हुई थी और खो थिंग ने ठीक किया था। अनेक लोग वहां से गुजरे। उदास य्वान श्या सोच रही थी, "क्या आज भी मनमोहक चांद निकलेगा? क्या खो थिंग अपने वादे के अनुसार यहां आएगा? या वह लंबा रास्ता लेकर दूसरी तरफ से घर लौट जाएगा? उसे उसके पिता और उसके बीच का फर्क देखना चाहिए···।" □

मा फंग : एक परिचय

शानशी प्रान्त की श्योओई काउन्टी के एक निर्धन किसान परिवार में 1922 में जन्मे मा फंग 1938 में आठवीं राह सेना में शामिल हो गए थे। 1940 में वे येनआन की लू शुन कला अकादमी के एक शाखा विद्यालय में अध्ययन के लिए भर्ती हुए। 1943 में वे शानशी स्वेइय्वान सरहदी क्षेत्र में एक सांस्कृतिक ब्रिगेड में काम करने वापस आ गए। दैनिक समाचार-पत्र ***लिबरेशन*** तथा अन्य अनेक समाचार-पत्रों के संवाददाता एवं संपादक रहने के अलावा वे शानशी-स्वेइय्वान प्रकाशन-गृह के मुख्य संपादक भी रह चुके हैं।

1949 में इन्हें अखिल चीन साहित्यिक सभा एवं कला वृत्तों के संघ तथा चीनी लेखक संघ की काउंसिल का सदस्य निर्वाचित किया गया। 1951 में इन्होंने केंद्रीय साहित्यिक अनुसंधान प्रतिष्ठान में अध्ययन किया। 1956 में शानशी प्रांतीय साहित्यिक एवं कला वृत्तों के संघ तथा चीनी लेखक संघ की प्रांतीय शाखा के पहले उपाध्यक्ष और बाद में अध्यक्ष बनाए गए।

इनकी रचनाएं बीस वर्ष की आयु से ही प्रकाशित होने लगी थीं। 1945 में शी रुंग के साथ मिलकर *ल्वीयांग के वीर* नामक उपन्यास लिखा जिससे इन्हें प्रचुर ख्याति मिली। 1950 में इनका लघु कहानी संकलन ***शत्रु का गांव*** तथा इसके पश्चात् ***एक विवाह***, ***हान मेइमेइ***, ***पुरानी खबर*** आदि कहानियां प्रकाशित हुईं जिन्हें इनके ***मेरा प्रथम नेता*** *एवं* ***पर्वत पर सूर्योदय*** में संकलित किया गया। 1960 में इनके उपन्यास ***ल्यू हूलान का जीवन-चरित्र*** तथा फिल्म पटकथा ***हमारे गांव के नवयुवक*** ने भी यथेष्ट प्रशंसा अर्जित की।

तत्काल विवाह

मां फंग

ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वालों को प्रायः तरह-तरह की 'तत्काल' सभाओं (किसी एक विशेष मुद्दे पर प्रकाश डालने के लिए घटनास्थल पर ही बुलाई गई सभाएं) में भाग लेने का मौका मिला होगा। परन्तु क्या उनमें से कोई किसी 'तत्काल विवाह' में भी शरीक हुआ होगा? शायद नहीं। लेकिन मैं शरीक हुआ हूं। इसी साल की जनवरी के अन्तिम दिनों की बात है- वसंतोत्सव के कुछ ही दिन पहले की। एक दिन सुबह जब मैं हाल में प्रसारित हुई 'केन्द्रीय कमेटी' के तीसरे पूर्णाधिवेशन की बुलेटिन पढ़ रहा था, हमारी काउन्टी की महिला संघ की अध्यक्षा ऊ आएइंग मुझे खोजती दौड़ी-दौड़ी आईं।

वह उत्तेजित स्वर में बोलीं, "सेक्रेटरी चू, कल शीलिंग ब्रिगेड में एक 'तत्काल' विवाह होने जा रहा है। हम सब आशा करते हैं कि आप उसमें सम्मिलित होने अवश्य आ सकेंगे।"

मेरे चेहरे पर प्रश्न जड़ा देखकर उसने तुरन्त ही व्याख्या की कि शीशान क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों से धन-लोलुपता से प्रेरित विवाह एक बड़ी समस्या बन गए हैं। घर में पत्नी लाने के लिए भावी दूल्हे को दुल्हन के परिवार को सगाई की राशि के रूप में कम से कम 500-600 य्वान का जुगाड़ करना ही पड़ जाता है, कहीं-कहीं तो 1,000 य्वान का भी। अधिक दिन नहीं बीते जब शीलिंग ब्रिगेड के

एक युवा प्रेमी-युगल को तीन वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी, फिर भी वे विवाह न कर सके, क्योंकि युवक के परिवार वाले आवश्यक रकम नहीं जुटा पाए थे। आखिरकार उन दोनों ने हाथ में हाथ बांधकर एक पहाड़ी की चोटी से कूदकर आत्महत्या कर ली।

इस घटना के बाद ऊ आएइंग कुछ लोगों को अपने साथ लेकर शीलिंग गईं ताकि वे उस दुर्घटना की प्रत्यक्ष जांच कर कुछ ऐसे बुनियादी काम भी कर सकें जिनसे ऐसे धन-लोलुप विवाह की कड़ी आलोचना करने के लिए समाज को एकजुट किया जा सके।

हाल में, अपने काम के दौरान उन्होंने पाया कि तीन जोड़ों ने सगाई के उपहारों की चिन्ता किए बिना ही विवाह करने का फैसला कर लिया है। इसलिए उसे और उसके सहकर्मियों को लगा कि इन जोड़ों को समाज के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसलिए उनके परिवारों से परामर्श करने के बाद उन्होंने सामूहिक विवाह समारोह मनाने का फैसला लिया और पड़ोस के सभी किसान परिवारों तथा स्थानीय नेताओं को निमंत्रण दिया। वह आशा करती थीं कि मैं भी इस 'तत्काल विवाह' में शामिल होकर ग्रामवासियों पर पड़ने वाले प्रभाव को और भी गहरा करने में सहायक हो सकूंगा।

चूंकि इस काउन्टी में मेरा तबादला हाल ही में हुआ था, मैं ऊ आएइंग से भली-भांति परिचित नहीं था। तथापि, वह मुझे बेहद योग्य नेत्री लगी थीं। यहां का महिला संघ बड़े उत्साह से काम कर रहा था। मुझे लगा कि मुझे उनको वाकई अपना सहयोग देना ही चाहिए। साथ ही, जबकि अवसर स्वयं ही आ पहुंचा था तो मैं शीलिंग ब्रिगेड पर भी एक नजर डाल लेना चाहता था। अतएव, लंच लेने के बाद हम कार में बैठकर ग्रामीण इलाके की ओर चल पड़े।

काउन्टी केन्द्र शीलिंग से 25 किलोमीटर से कुछ ज्यादा दूर था। रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा और पहाड़ों पर सर्पिल बल खाता हुआ था। हमारी जीप कई बार बड़ी मुश्किल से उनके बीच से गुजर पाती थी। पहाड़

पर घनी झाड़ियां और पेड़ उगे हुए थे और ढालू स्थानों में सीढ़ीनुमा खेतों की कतारों पर कतारें मिल रही थीं। प्राय: 110 परिवारों वाला यह गांव एक खड़ी पहाड़ी की तलहटी में बसा हुआ था। मकान जीर्ण-शीर्ण दिख रहे थे। केवल कभी-कभार खपरैल की छत वाले नए बने एक-दो मकान दिख जाते थे। गांव में सड़क के दोनों ओर की दीवारों पर रंग-बिरंगे पोस्टर चिपके हुए थे जिनमें स्त्रियों और पुरुषों को अपना जीवन साथी खुद चुनने और धन-लोलुप विवाह समाप्त करने के लिए प्रेरित किया गया था।

जैसे ही हमारी गाड़ी गांव के बीच पहुंची, दो गायों को हांकते एक आदमी की वजह से हमारा रास्ता रुक गया। मैं उसे देख नहीं पा रहा था। मुझे तो सिर्फ उसकी रुई की बंडी पर लगे बड़े से पैबन्द की झलक मात्र दिखी थी। ड्राइवर बार-बार भोंपू दे रहा था। परन्तु वह न तो उस ओर ही जरा-सा ध्यान दे रहा था और न गायों को सड़क के एक किनारे ठेल देने का ही उसका कोई इरादा लग रहा था। मजबूरन हमको अपनी-अपनी गाड़ी धीमी करनी पड़ी। तभी मेरी निगाह अपनी दाहिनी ओर दीवार पर चिपके एक लाल कागज पर छपे पोस्टर पर पड़ी। उस पर लिखा था, "हमारी ब्रिगेड द्वारा आयोजित तत्काल विवाह" समारोह में पधारने के लिए सेक्रेटरी चू का भावभीना स्वागत! मैंने सोचा कि शायद ऊ आएइंग ने उन्हें टेलीफोन पर मेरे आने का समाचार दे दिया होगा। तभी उन लोगों ने यह चटपट छपवा डाला होगा।

आखिर उस आदमी ने अपनी गायें एक किनारे कर लीं और शीघ्र ही हमारी जीप ब्रिगेड दफ्तर के द्वार पर जा लगी। कार के रुकते ही कार्यकर्ताओं का एक दल हमारे पास आया और मुस्कराते हुए मुझे प्रांगण में ले गया। करीब दस युवक-युवतियां विवाह-समारोह की सजावट में लगे थे। उनमें से कुछ लाल कागज के फूलों को लेकर व्यस्त थे, कुछ कागज पर 'दुगुनी प्रसन्नता' के चीनी रेखाक्षर काट रहे थे। कुछ और भी थे जो कागज की लालटेनें बना रहे थे या रेशम की पट्टियों से गहने बना रहे थे। वह विशाल प्रांगण विवाह की तैयारियों

में जुटे युवाजनों के उत्साह-भरे वातावरण से जीवन्त हो उठा था। युवाजन मेरी ओर देखकर मुस्कराए और आपस में खुसफुसाने लग गए। लेकिन इसके पहले कि मैं उनसे 'हलो' कह पाता, मुझे ब्रिगेड दफ्तर में ले जाया गया।

दफ्तर में ऊ आएइंग ने प्रत्येक कार्यकर्ता को मेरा परिचय दिया। इस बीच एक मेरे मुंह धोने के लिए तसले में पानी और दूसरा हम सबके लिए चाय ले आया। हर कोई बहुत उत्तेजित था और मुझे समाचार सुनाने के लिए व्यग्र हो रहा था। गांव के नौजवान यह सुनकर खास तौर से प्रसन्न थे कि मैं आने वाला हूं। उन्हें आशा थी कि इस 'तत्काल विवाह' के माध्यम से धन के लालच में किए जाने वाले विवाहों की प्रथा जड़ से खत्म हो जाएगी। मुझे यह भी बताया गया कि जिन लोगों का आज विवाह होने वाला है उनके परिवार वाले स्वयं को विशेष रूप से सम्मानित अनुभव कर रहे थे। यह सच भी हो सकता था, क्योंकि किसी काउन्टी सेक्रेटरी का ऐसे दुर्गम दूर-दराज के पहाड़ी गांव के सामान्य किसानों के विवाह में भाग लेने के लिए खास तौर पर आना एक विशेष महत्वपूर्ण अवसर तो था ही।

इसके पश्चात निकटवर्ती ब्रिगेड से विवाह-उपहार (बधाई देती रेशमी चादरें और फ्रेम में मढ़ी तस्वीरें) आ पहुंचे। मस्ती भरी, उत्साह और उत्तेजनापूर्ण बातचीत से सारा कमरा गूंज रहा था। तभी दरवाजे पर टंगे सूती पर्दे को उठाकर एक युवती ने अपना सिर अंदर किया। वह शाखा सेक्रेटरी चंग कूय्वी से कह रही थी, "चाचा चंग, क्या मैं आपसे एक मिनट के लिए मिल सकती हूं? आपसे बात करने की कुछ जरूरत आ पड़ी है।" ऊ आएइंग ने स्नेहपूर्ण आवाज में कहा, "अड़लान, अगर तुम्हें बातें करनी हैं तो आओ, अंदर आ जाओ।"

अब अंदर आने के अलावा युवती के लिए और कोई चारा नहीं था। उसके पीछे-पीछे एक सुदृढ़ रूखा-सा युवक भी था। ऊ आएइंग ने उनका परिचय देते हुए बताया कि कल शादी होने वाले जोड़ों में से ये भी एक हैं। लड़की का नाम वांग अड़लान था, लड़के का चंग

युनशान।

ऊ आएइंग ने खिलखिलाते हुए कहा, "तो फिर तैयारी पूरी है न? देख रही हो न, शादी में काउन्टी-सेक्रेटरी भी मौजूद रहेंगे!"

वांग अड़लान ने सिर नीचा कर एक धीमी-सी आह भरी, "कामरेड ऊ, हमारी शादी··· नहीं होगी।"

"क्या···? क्या हो गया?" ऊ आएइंग ने व्यग्रतापूर्वक पूछा। परेशानी से लाल चेहरा लिए वांग अड़लान के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। उसका पुरुष मित्र चंग युनशान उदासी भरे बोला, "क्या हो गया? ···इसके पिता ने अपना इरादा बदल दिया है। उसने अभी-अभी मुझे आखिरी चेतावनी दी है। वह मुझसे 500 य्वान की मांग कर रहा है। अगर मैं यह रकम ला दूं तो हमारी शादी कल हो जाएगी, वरना··· खेल खत्म।"

"सच?" कार्यकर्ताओं ने आश्चर्य से कहा।

यह समाचार अजीब था। कमरे में उपस्थित हरेक व्यक्ति ने एक क्षण के लिए स्तब्ध चुप्पी साध ली। प्रांगण में विवाह समारोह की सजावट में लगे युवाजनों ने दफ्तर में भीड़ लगा ली। जब उन्होंने आखिरी वक्त में धन की इस मांग के बारे में सुना तो वे भी हक्के-बक्के रह गए।

मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने प्रत्येक परिवार में जाकर अलग-अलग प्रचार कार्य चलाया था या नहीं, तो हरेक एक साथ ही उत्तर देने लगा। सारा किस्सा सुनाने की चेष्टा में वे एक-दूसरे की बात काटने लगे।

उनके कोलाहल से कमरा भर उठा। उस हल्ले-गुल्ले के बीच में जो कुछ जान पाया वह यह था कि वांग अड़लान का पिता वांग श्वानन्यू पहले तो सगाई के उपहार न मांगने को खुद राजी हो गया था। अड़नाल और चंग युनशान दोनों ने इस बात के सच होने का समर्थन किया। यह भी स्पष्ट था कि ये दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे और दोनों ने अपनी मर्जी से एक-दूसरे को पसंद किया था। उनके मकान ठीक आमने-सामने थे और वे बचपन से ही साथ-साथ खेलते और काम करते आए थे। इसके अलावा दोनों के माता-पिता इस सम्बन्ध से पूरी तरह सन्तुष्ट थे।

भला कौन सोच सकता था कि ऐन आखिरी घड़ी में ऐसा झंझट उठ खड़ा होगा? ऊ आएइंग मारे क्रोध के प्रायः रुआंसी हो गई थीं। नौजवान संघ के सचिव चू थ्येवा ने प्रचंड क्रोध में भर कर घोषणा कर दी, "साफ जाहिर है कि वांग श्वानन्यू जानबूझकर यह झंझट खड़ा कर रहा है ताकि हमारे पांव तले से जमीन खिसक जाए। ऐसे पुरातनवादी विचारों को सुधारने के लिए हमें तुरन्त ही कुछ करना पड़ेगा।"

मैंने फौरन ही कहा, "मेरे विचार से पहले वस्तुस्थिति का ठीक-ठीक पता लगाना और यह जान लेना बहुत आवश्यक है कि आखिर उसने अचानक ही अपना विचार क्यों बदल डाला।"

"ठीक है, मैं जाकर उससे बात कर आता हूं," अभी तक एक शब्द भी न बोलने वाले शाखा सेक्रेटरी चंग कूय्वी ने कहा। वह उठा और वांग अड़लान तथा चंग युनशान को साथ लेकर बाहर निकल गया।

चंग कूय्वी की आयु पचास से ऊपर थी। उन्नत कृषि उत्पादक सहकारी समितियों के युग में वह इस गांव का सेक्रेटरी रह चुका था। सांस्कृतिक क्रांति के दौरान उसे अपने पद से हटा दिया गया था। हाल ही में उसे दुबारा बहाल किया गया था। वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने स्वीकार किया कि केवल वही वांग अड़नाल के पिता से बात कर

सकता था। मैंने पूछा कि आखिर यह वांग श्वानन्यू है कैसा आदमी। पता चला कि वह करीब साठ वर्ष का दरिद्र किसानी पृष्ठभूमि वाला बूढ़ा है। जापान के विरुद्ध प्रतिरोधात्मक युद्ध में वह जन-मिलिशिया में था और छठे दशक में भूमि सुधार के युग में वह बेहद सक्रिय रहा था। उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि अच्छी थी। वह परिश्रमी और ईमानदार था, तथापि वह थोड़ा जिद्दी अवश्य था, जिससे उसे लोग 'बूढ़ा बैल' कहा करते थे।

बहुत कम बोलना उसकी आदत थी। परन्तु, उसके थोड़े से ही वे शब्द आपको धराशायी कर सकते थे। अगर आपने उसे पूर्व दिशा में जाने को कहा तो वह अपनी जिद में अवश्य ही पश्चिम की ओर चला जाएगा। कभी-कभी वह खुद से ही उलझ जाता था। एक बार पाखाना साफ करते हुए उसकी लापरवाही से कुछ विष्ठा उसके पैंट पर गिर गई। बस, क्रोध में बिफर कर उसने बेलचा उठाया और पाखाने की खुड्डी में बार-बार उसे मारते हुए चीखने लगा, "और गिरेगी··· बोल··· फिर गिरेगी कभी मेरे पैंट पर?" नतीजे में वह शीघ्र ही सिर से पांव तक विष्ठा से सन गया। ऐसे अनेक किस्से लोगों ने मुझे सुनाए। वे कुछ नमक-मिर्च भी लगा रहे होंगे। फिर भी उनसे बूढ़े की सनकें तो साफ झलक ही रही थीं।

हम लोग इस समस्या पर बात कर ही रहे थे कि चंग कूय्वी अकेला वापस लौट आया। उसने बताया कि वांग श्वान न्यू 500 य्वान लेने की बात पर अड़ा हुआ है और उससे चाहे जितने तर्क या चाहे जितनी प्रार्थना की जाए, वह अपना विचार नहीं बदलेगा। उल्टे दलीलें और निवेदन सुन-सुन कर उसका क्रोध और भी भड़क गया है और अब वह गांव से बाहर पहाड़ों की ओर चला गया है।

चओ थ्येवा बोल उठा, "वह गांव से बाहर भले चला गया हो, परन्तु इस समस्या से तो नहीं बच निकल सकता। कह सकते हैं कि पुजारी चला गया, पर मंदिर तो वहीं है। आज रात में जब वह वापस लौट आएगा, हम उससे निबट लेंगे।

कुछ नौजवानों ने उससे सहमति प्रकट की।

ऊ आएइंग ने मेरी ओर मुड़कर पूछा, "सेक्रेटरी चू, क्या आपके ख्याल से 'तत्काल विवाह' के समय अवांछित रीति-रिवाजों के समर्थक के रूप में हम इस 'बूढ़े बैल' की बखिया उधेड़कर, उसके उदाहरण के माध्यम से जनता को शिक्षित कर सकेंगे?"

वहां उपस्थित अधिकांश लोगों ने इस विचार का समर्थन किया। खासकर, उन नौजवानों ने जिनके विचार इस समय तक अटल बन गए थे। उनका कहना था कि 'बूढ़ा बैल' विवाह के कानून का जघन्य ढंग से विरोध कर रहा है। यदि हमने उसके इस कार्य की तीव्र आलोचना करने की दिशा में तुरन्त आवश्यक कदम नहीं उठाए तो हम इस बुरी प्रथा को कैसे खत्म कर सकेंगे? बूढ़ा शाखा-सेक्रेटरी चंग कूय्वी सिगरेट पीने पर सारा ध्यान केन्द्रित होने का बहाना किए, सिर झुकाए, मौन बैठा सबकी उत्तेजना शांत होने की प्रतीक्षा कर रहा था।

आखिरकार उसने बोलना शुरू किया, "तो आप विवाह-समारोह को आलोचना-सभा में बदल देना चाहते हैं? यह तो ऐसा ही होगा मानो 'बूढ़े बैल' की किसी मांसपेशी में मोच आ गई हो और हमने अभी तक उसकी नब्ज भी न टटोली हो। याद रखिए, यदि आपने रस्सी को ज्यादा खींचा तो वह टूट जाएगी।"

स्पष्ट था कि चंग कूय्वी के अनुभव ने उसे अधिक सतर्क बना दिया था। मैं भी उससे सहमत था। गांव के लोगों की मेरी जानकारी के अुनसार इस 'बूढ़े बैल' जैसे मामले आपसी बातचीत द्वारा बड़ी आसानी से सुलझाए जा सकते थे। शायद यही सर्वश्रेष्ठ उपाय हो कि नेता होने के नाते मैं खुद 'बूढ़े बैल' से मिलकर उसे समझा-बुझाकर इस जिद को खत्म कर दूं। मैंने लोगों से मेरे रात के भोजन की व्यवस्था उसके घर पर करने को कहा और चंग कूय्वी ने तुरन्त ही आदमी भेजकर यह बात उसके परिवार को सूचित करवा दी।

"बाकी दो परिवारों का क्या हाल है," मैंने पूछा। "उनके साथ तो कोई समस्या नहीं है?"

हरेक ने मुझे विश्वास दिलाया कि वहां कोई गड़बड़ नहीं होगी और ऊ आएइंग ने मुझे सुझाया कि पूरी तौर पर आश्वस्त होने के लिए मुझे उन दो परिवारों से भी जाकर मिल आना चाहिए। सबसे पहले मुझे वांग शुनशी के घर ले जाया गया।

मकान का आंगन पुराना और टूटा-फूटा था। परन्तु उसे एकदम साफ-सुथरा, झाड़-पोंछकर रखा गया था। दरवाजे के दोनों ओर लाल कागज की पट्टियों पर वैवाहिक अवसर के अनुरूप बधाई-वाक्य लिखे हुए थे और खिड़कियों पर 'दुगुनी प्रसन्नता' के रेखाक्षर आंके हुए थे। मित्रों और स्वजनों की आवाजाही से उस घर का वातावरण विवाह की तैयारियों से भरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वांग शुनशी बड़ा मिलनसार और विनम्र बूढ़ा निकला। उसने बार-बार मेरे प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि उनके परिवार में शादी के अवसर पर किसी काउन्टी सेक्रेटरी की उपस्थिति के गौरव की बात तो उनमें से कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था। वह सामूहिक विवाहों का समर्थक था, क्योंकि उसके अनुसार इनमें फिजूलखर्ची का पूरा मजा बिना कुछ खर्च किए ही मिल जाता था।

उसके परिवार के लोगों ने मुझसे रात के भोजन तक ठहरने का बार-बार अनुरोध किया। किन्तु मुझे यथाशक्ति विनम्रतापूर्वक उन्हें मना कर देना पड़ा। पहले तो मैंने दूसरे परिवार में जाने की बात सोच रखी थी, लेकिन वांग के घर के मुख्य दरवाजे से बाहर आते ही मुझे अड़लान चिन्ताग्रस्त अवस्था में मेरी प्रतीक्षा करती दीख पड़ी। मैंने उससे पूछा कि क्या उसका पिता वापस लौट आया है तो उसने झट सिर हिलाकर हामी भरी।

साथ के लोगों से विदा लेकर हम सीधे अड़लान के घर की ओर चल पड़े। रास्ते में अड़लान ने मुझे बताया कि उसका पिता पहाड़ों से ईंधन की लकड़ियां काटकर अभी-अभी वापस लौटा था। जब उसने सुना कि सेक्रेटरी चू ने खाने की व्यवस्था उसी के घर पर करवाई थी तो वह बोला, "अच्छा तो वह ब्रिगेड हेडक्वार्टर का बढ़िया भोजन नहीं

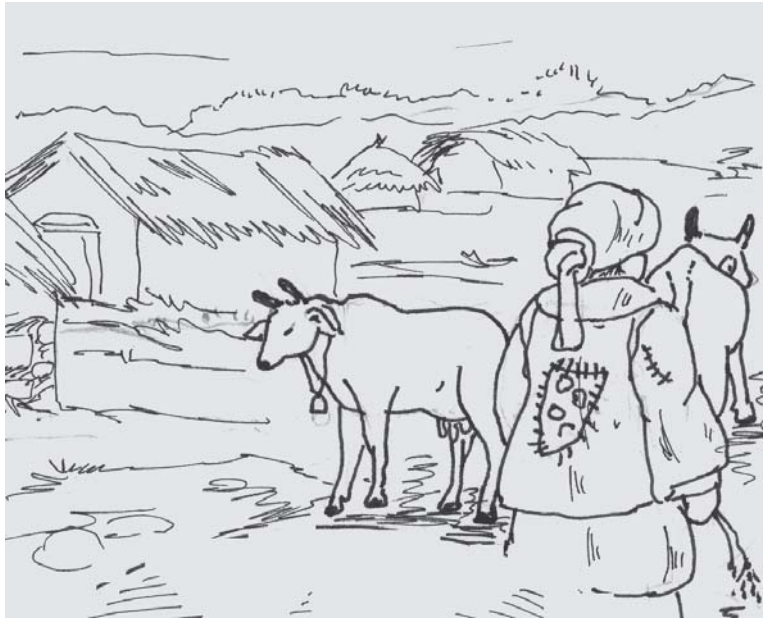

खाना चाहता। वह एक सामान्य किसान के घर खाने आना चाहता है ···हुं··· एकदम पुराने जमाने के कार्यकर्ताओं सरीखा।" "जानते हैं उन्होंने मेरी मां को कोई भी विशेष खाना नहीं पकाने दिया है।" अड़लान कह रही थी।

मैंने तुरन्त उत्तर दिया, "यह तो उसने ठीक ही किया।"

अड़लान ने ठण्डी आह भरी और बोली, "सेक्रेटरी चू, मेरे पिता का गुस्सा बहुत बुरा होता है। अगर वे आपसे कोई अप्रिय बात कह बैठें तो मुझे उम्मीद है, आप उसे सहन कर लेंगे।"

मैंने हंसकर उसको आश्वस्त किया, "तुम चिन्ता मत करो। मैं उनके साथ बहस में उलझूंगा ही नहीं।"

अड़लान के पीछे-पीछे चलता मैं उसके मकान के आंगन में पहुंचा। ऐन सामने, उत्तरी छोर पर तीन टूटे-फूटे कमरे थे और पश्चिम की ओर बैलों का एक बाड़ा था। बैलों की नांद के सामने एक भारी-भरकम बूढ़ा सिर नीचा किए खड़ा सूखी घास को उलट-पुलट

रहा था। अड़लान ने ऊंची आवाज में उसे बताया, "पिताजी, सेक्रेटरी चू आए हैं।"

बूढ़े ने अपना सिर उठाया और मेरी ओर ताका। फिर रूखे स्वर में, "जाओ, अन्दर बैठो," कहकर वह मुड़ा और उसने बची हुई घास को नांद में ठूस दिया। मुड़ते समय उसकी रुई की बंडी की पीठ पर लगे बड़े से थेगड़े पर अचानक मेरी निगाह पड़ी। तो यही था वह शख्स जो बैल हांकते हुए हमारी जीप को रास्ता नहीं दे रहा था!

अड़लान ने सामने के दरवाजे पर पड़ा सूती पर्दा उठाया और मैं अंदर चला गया। अंदर एक बुढ़िया थी जो, जाहिर है, अड़लान की मां ही रही होगी। वह लगभग खाना तैयार कर चुकी थी। और, एक चौदह-पन्द्रह वर्ष का लड़का था जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वह अड़लान का छोटा भाई था। वह बैठा-बैठा चूल्हे की धौंकनी चला रहा था। उन्होंने मेरा पुरजोश स्वागत किया और अंदर आकर ईंटों की बनी खाट पर बैठने का आग्रह किया।

अभी अड़लान ने छोटी-सी खाने की मेज को सजाना खत्म ही किया था कि 'बूढ़ा बैल' अंदर आ गया और बिना एक शब्द बोले मेरे सामने बैठ गया। इससे मुझे पहली बार नजदीक से उसका जायजा लेने का अवसर मिला- चौखूटा चेहरा, भरी लम्बी दाढ़ी, गहरी झुर्रियों से भरा कपाल। वह देर तक अपनी आंखें मेरी नजरों में गड़ाए रहा। मानो वह मेरे प्रश्नों की बाट देख रहा हो। लेकिन मेरे तीन प्रश्नों के उत्तर में वह मुश्किल से एक वाक्य ही बोला था। मैंने उससे पूछा कि वह साल भर में कितने श्रम-दिन अर्जित कर लेता है, एक श्रम-दिन में बोनस के कितने अंक प्राप्त कर लेता है, और कि सामान्य रूप से उसका काम कैसा चल रहा है। मुझे सीधा उत्तर देने के बजाय उसने कहा था, "मैं तो सिर्फ यही कह सकता हूं कि हम भूखे नहीं मर रहे।" इसके बाद उसने एकदम चुप्पी साध ली।

दूसरी ओर उसकी पत्नी वार्तालाप का सूत्र जोड़ने की बराबर चेष्टा करती रही ताकि वातावरण कुछ तो कम बोझिल हो सके। कुछ

देर बाद 'बूढ़ा बैल' सहसा कह उठा, "अगर आपको कुछ कहना है तो खुलकर क्यों नहीं कहते? मैं सगाई की उपहार राशि के रूप में 500 ग्वान मांग रहा हूं। बस बात खत्म हुई। आप इस बारे में क्या करने जा रहे हैं? क्या आलोचना-सभा बुलाएंगे? मैं उसके लिए तैयार हूं।"

"यह आलोचना का विषय नहीं है," मैंने तुरन्त उत्तर दिया। "मैं तो आपसे सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि जब पहले आप सगाई-उपहार की रकम न लेने के लिए राजी हो गए थे, तो फिर आज दोपहर में वह अचानक क्यों मांग बैठे?"

"आप तो जानते ही हैं कि राज्य भी हमेशा अपनी नीतियां बदलता रहता है। तो एक मामूली किसान अपना विचार क्यों नहीं बदल सकता?"

शायद अड़लान को डर था कि उसका पिता क्रोध में ऐसा कुछ न कह बैठे जिससे मैं किसी भद्दी स्थिति में पड़ जाऊं। इसलिए वह बीच में ही बोल उठी, "पिताजी, खाना तैयार है। पहले खा लें, फिर बातें करते रहिएगा।"

'बूढ़ा बैल' स्वीकार में कुछ बुदबुदाया और दूसरे ही क्षण मेज पर खाना लग गया : लाल मिर्च मिली खट्ट पत्तागोभी की एक बड़ी-सी प्लेट और रतालू के कुछ टुकड़े मिले मकई तथा बाजरे के दलिए के पांच प्याले। 'बूढ़े बैल' ने अपनी चापस्टिक नहीं उठाई। वह बैठा सिगरेट पीता रहा और मुझे खट्टी पत्तागोभी के निवालों को दलिए के साथ निगलते देखता रहा। अचानक उसने पूछा, "खाना कैसा रहा?"

बड़ा सीधा-सा सवाल था। लेकिन, सच कहूं, मेरी समझ में नहीं आया कि उसे क्या उत्तर दूं। क्या कह दूं कि खाना अच्छा है, जबकि उसे निगलने में साफ-साफ दिक्कत हो रही थी। या यह कह दूं कि अच्छा नहीं है। तो फिर वह अवश्य ही उखड़ जाएगा। अन्त में मैंने उससे स्पष्ट ही कह दिया, "वास्तव में खाना अच्छा तो नहीं है, पर मैं अपना काम चला लूंगा।" फिर सहसा भावुकता में भरकर मैंने यह

भी जोड़ दिया, "मुक्त हुए तीस साल बीत चुके, फिर भी अभी तक हमारे किसान गरीबी की रेखा पर ही रहे हैं। यह हालत भूमि सुधार वाले दौर से हरगिज बेहतर नहीं है।"

'बूढ़े बैल' ने सिर हिलाया और पूछा, 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान आप किस ओर थे?"

"मुझे तो पूंजीवादी मार्ग पर चलने वाला करार दे दिया गया था। तीन साल तक मुझे जेल में ठूंस दिया गया और फिर सात वर्षों तक के लिए कार्यकर्ताओं के एक स्कूल में भेज दिया गया था।"

यह सुनते ही 'बूढ़ा बैल' तनिक प्रसन्न दिखाई दिया। उसने सिगरेट बुझा दी और अपनी पत्नी से शराब का पात्र गर्म करने तथा सुअर के गोश्त के टुकड़े काटने को कहा। मैं विरोध प्रदर्शित करने की मुद्राएं बनाता रहा, किन्तु अड़लान की मां कहने लगी, "यह शराब हमने शादी के लिए मंगाई थी। इसलिए हमें इसमें कोई दिक्कत नहीं होगी।" फिर उसने और अड़लान ने गोश्त के टुकड़े काटे और शराब गर्म कर दी।

'बूढ़े बैल' ने मेरा प्याला कसकर पकड़ लिया और कहा, "अगर आप हमें अपमानित नहीं करना चाहते तो पी डालिए, यही अच्छा होगा। लेकिन अगर सोचते हों कि न पीना ही ठीक होगा, तो आप खाते रहिए, मैं अकेला ही पीता रहूंगा।"

ऐसी हालत में भला मैं कैसे इनकार कर सकता था? फिर शराबनोशी के बीच 'बूढ़े बैल' ने मुझसे कहा, "ठीक, तो अब हम बातें करें।"

"किस बारे में?" मैंने पूछा।

"धन के लालच में किए जाने वाले विवाहों के अनिष्टकारी होने के बारे में। सगाई में उपहार राशि मांगना कितना प्रतिक्रियावादी काम है, इस बारे में। और इस बारे में कि हमारे किसान कितने पिछड़े हुए हैं। वगैरा-वगैरा।"

मैं हंस पड़ा। "आपको कैसे पता चला कि मैं इस सबके बारे में बात करना चाहता हूं।?"

"मुझे आप एक भी ऐसा कार्यकर्ता बताइए जो इन तमाम बकवासों के बारे में बात न करना चाहता हो," 'बूढ़े बैल' ने उत्तर दिया। "वरना आपने मेरे घर पर खाने की व्यवस्था और किस उद्देश्य से करवाई थी?"

"तो फिर ठीक है।" मैंने जवाब दिया, "आइए, हम अपने सारे ताश के पत्ते मेज पर खुले रख दें और कुछ साफ-साफ बातें कर लें। क्यों, ठीक रहेगा ना? मैं तो आपसे सिर्फ एक ही सवाल पूछना चाहता हूं कि आप सगाई की उपहार राशि में 500 ग्वान लेने पर क्यों अड़े हुए हैं?"

'बूढ़ा बैल' चिड़चिड़ाकर बैठा-बैठा शराब पीता रहा। फिर कुछ देर बाद उसने अपनी चुप्पी तोड़ी। "मैंने पिछले कई वर्षों से अपने घर पर किसी कार्यकर्ता को खाने पर नहीं बुलाया है। कह नहीं सकता कि आज जैसे भोजन का दाम आपको देना पड़ता है या नहीं।"

"जरूर देना पड़ता है," मैंने उत्तर दिया, "यही तो राष्ट्रीय नियम है। खाना अच्छा हो या बुरा, तीस सेन्ट प्रति दिन के हिसाब से देना ही पड़ता है, और साथ में 600 ग्राम अनाज का कूपन भी।"

'बूढ़े बैल' ने कहा, "पिछले 23 वर्षों से मैं अड़लान को पाल-पोस रहा हूं। अगर एक दिन का खर्च 20 सेन्ट भी मान लें, तो बताइए, मुझे कितनी रकम मिलनी चाहिए।?"

वह मेरे उत्तर की प्रतीक्षा में रुका रहा। लेकिन मेरे कुछ कह पाने के पहले ही अड़लान बीच में बोल बैठी, "तो क्या मैं घर में बैठी-बैठी सिर्फ परिवार का खाना ही खाती रही हूं? मैं साल में कम से कम 200 श्रम-दिन तो कमा ही लेती हूं।"

"क्यों यह ठीक कह रही है न?" मैंने 'बूढ़े बैल' से पूछा।

"हां, कह तो ठीक रही है। लेकिन अगर मैंने इसकी शादी कर दी तो इसके साथ ही ये 200 श्रम-दिन भी तो मेरे घर से चले जाएंगे।"

"तो आपका विचार है कि शादी में दिए जाने वाले सगाई के उपहार बिलकुल तर्कसंगत और न्यायपूर्ण होने चाहिए, क्यों?" मैं हंस पड़ा था।

लेकिन 'बूढ़े बैल' ने एक प्रश्न द्वारा मुझे उत्तर दिया। "अगर मैंने अपनी बेटी की शादी नववधू मूल्य लिये बिना ही कर दी, तो फिर उसके छोटे भाई की पत्नी लाने के लिए मेरे पास पैसा कहां से आएगा?"

यह सुनकर अड़लान का भाई शर्म से लाल हो गया और अपना कटोरा लेकर कमरे से बाहर निकल भागा।

खाना खाते-खाते ही 'बूढ़ा बैल' कहने लगा, "आप तो बड़ी आसानी से कह देंगे कि वह लड़का तो अभी बहुत छोटा है और, कि अगर हमने नए विवाह कानून का पूरी तरह से पालन किया तो भविष्य में 'नववधू मूल्य' चुकाने की कोई जरूरत ही नहीं रह जाएगी। हंह! अगर आपका ख्याल है कि नए विवाह कानून का पालन कराने के लिए मैं आप पर निर्भर कर सकता हूं, तो···"

अड़लान की मां ने बात काटी, "फौरन अपनी बकवास बंद कर दो तो।"

"बकवास? पिछले कुछ वर्षों में हमने कब नए विवाह कानून का अक्षर-अक्षर पालन नहीं किया है? पर मुझे एक परिवार तो ऐसा बता दो जिसे अपनी बेटियों के लिए 'नववधू मूल्य' वसूल करने की लालसा न होती हो! एक परिवार तो ऐसा बता दो जिसे 'नववधू मूल्य' न चुकाना पड़ा हो! हां, वे खुलेआम ऐसा नहीं कर पाते, लुक-छिपकर करते हैं।"

मैंने चौंककर पूछा, "तुम क्या यह कहना चाहते हो कि वांग शुनशी के परिवार ने चोरी-छिपे पैसे दिए हैं?"

"हो सकता है न दिए हों। मुझे नहीं पता," 'बूढ़े बैल' ने उत्तर दिया। "मान लेता हूं, उन्होंने कोई रकम नहीं चुकाई। लेकिन उन्हें तो सिर्फ सुअर के गोश्त के बदले भेड़ का गोश्त ही मिल रहा है।"

मैं नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कहे जा रहा है। लेकिन अड़लान की मां ने स्पष्ट किया कि

वांग शुनशी का बेटा जिस लड़की से शादी करने वाला है वह वांग की छोटी साली की बेटी है। और संयोगवश वांग की अपनी पुत्री का विवाह भी इसी साली के बेटे से हुआ है। यह एक रिश्तेदार के बदले दूसरे रिश्तेदार का आपसी बदलाव था और इसलिए यह स्वाभाविक भी था कि ऐसी परिस्थिति में दोनों परिवार एक-दूसरे से 'नववधू मूल्य' न लें।

"और उस दूसरे परिवार की क्या स्थिति है?" मैंने पूछा।

"दूसरा परिवार?" कुछ क्षणों के लिए 'बूढ़ा बैल' भावशून्य बना बैठा रहा। "हुं... मतलब... आपका मतलब ऊ छंगयओ के परिवार से है क्या? उनके पास तो 'नववधू मूल्य' न देने की और भी बड़ी वजह है।"

"क्या वह शादी भी रिश्तेदारी में ही हो रही है।?"

"नहीं, ठीक ऐसा नहीं है," 'बूढ़े बैल' ने उत्तर दिया, "उसका बेटा तो घर-जमाई बनने वाला है।"

"आज के युग में जबकि स्त्री और पुरुष दोनों बराबर हैं तो क्या यह उतनी ही अच्छी बात नहीं है कि पुरुष भी जाकर अपनी पत्नी के परिवार में रहे?"

"बात अच्छी है या बुरी, इसका फैसला करने के लिए हमें पहले हरेक स्थिति का जायजा लेना चाहिए," 'बूढ़ा बैल' ने शराब का एक और प्याला भरा और फिर समझाने लगा कि ऊ छंगयओ की पत्नी का देहान्त तभी हो गया था, जबकि वह प्रौढ़ावस्था में ही था। उसका यही एक बेटा था। इसलिए वह उसका माता-पिता दोनों ही बन गया। दोनों बाप-बेटे बहुत मेहनती थे, किन्तु बहुत चेष्टा करने पर भी इतना पैसा जमा नहीं कर पाए कि वह लड़का अपने लिए पत्नी ला सके। बेटा अट्ठाईस पार कर उन्तीस वर्ष का होने जा रहा था, फिर भी वह अभी तक कुंआरा था। उसका संबंध उससे कुछ वर्ष बड़ी एक विधवा से हो गया था। लेकिन चूंकि विधवा का भी एक पुत्र था, उसने अपनी

ससुराल जाकर रहने से साफ इनकार कर दिया। उसका सुझाव था कि लड़का उसी के यहां आकर रहने लग जाए। ऊ छंगयओ ने इस पर काफी लंबे अरसे तक सोच-विचार किया। किन्तु आखिरकार मान जाने के अलावा उसके सामने और कोई चारा नहीं था। अभी उसी दिन वह बूढ़ा रोते-रोते 'बूढ़े बैल' के पास आया और कहने लगा, "मेरा तो सिर्फ एक ही बेटा है। मैं उसकी फिक्र में घुला जा रहा हूं। मैं अपने बेटे को सारी जिन्दगी कुंआरा रहते नहीं देख सकता।"

अपनी बात समाप्त करते हुए 'बूढ़े बैल' ने निःश्वास छोड़ा। हम किसानों के लिए और कोई रास्ता है ही नहीं। हमें तो हर हालत में जैसे बने निर्वाह करना ही पड़ता है।"

यह कहते उसने अपने प्याले में थोड़ी और शराब डालनी चाही, लेकिन बर्तन खाली हो चुका था। उसने बर्तन अड़लान को देते हुए आदेश दिया, "जाओ, मेरे लिए एक पात्र और ले आओ।"

"पिताजी, मेहमान ने बहुत पहले ही पीना बंद कर दिया है। आपको भी···"

'बूढ़े बैल' ने फौरन उसकी ओर घूरा। "मेरे भी दो हाथ सलामत हैं। मालूम है न?"

वह बिस्तर से उतरने लगा। अड़लान की मां ने जल्दी से पात्र उसके हाथ से ले लिया और एक दूसरा पात्र आधा भर दिया। यही नहीं, उसने गिलास भी भर दिया। फिर वह बोली "तुम्हें तो वह लड़का, युनशान, बहुत पसंद है। और, तुम तो शुरू से ही कहते रहे हो कि तुम्हें 'नववधू मूल्य' नहीं चाहिए। अभी कल ही तो तुमने कहा था, "भले ही हम इतने गरीब क्यों न हो जाएं कि हमें भीख मांगनी पड़े पर हम अपनी बेटी को हरगिज नहीं बेचेंगे, और अब आज दोपहर से तुमने ऐसी हाय-तौबा मचानी शुरू कर दी है कि घर में कोई चैन से बैठ नहीं पा रहा। गांव के सारे नेता लोग भी इतने परेशान हो गए हैं कि···"

"हुआ, बहुत हुआ," 'बूढ़े बैल' ने पत्नी की बात काटी। "मैं किसी भी नेता को खुश करने के लिए अपनी बेटी की शादी नहीं करूंगा।"

मैंने मुस्कराकर कहा, "जहां तक मैं समझता हूं, तुमने यह बात इसीलिए उठाई क्योंकि मैं यहां आ गया हूं।"

'बूढ़े बैल' ने इनकार नहीं किया। लेकिन उसने एक और प्याला भरा और बोला, ''तो काउन्टी सेक्रेटरी को भी इस मामूली-सी बात के लिए यहां तक गाड़ी में बैठकर आना पड़ गया! क्या आप मुझे यह समझाना चाहते हैं कि इस 'तत्काल विवाह' के बाद धन-लोलुप विवाह की प्रथा जड़ से गायब हो जाएगी?"

"जड़ से गायब न भी हो, फिर भी क्या उस प्रथा को बढ़ावा देने के बजाय यह बेहतर नहीं होगा?" मैंने उत्तर दिया।

'बूढ़े बैल' ने कुछ देर तक कोई उत्तर नहीं दिया। आखिर उसने कहा, "अपनी बेटी बेचना कोई विचित्र बात तो नहीं। पुराने चीन में तो बेटी बेचना बड़ी सामान्य-सी बात हुआ करती थी। लोग बहुधा अपने बेटे, और यहां तक कि अपनी बीवियां तक बेच दिया करते थे। जानते हैं क्यों? मैं आपको बताता हूं। ···गरीबी।"

अब तक उसका चेहरा गर्दन तक लाल सुर्ख हो चुका था और उसकी नाक पर पसीना चुहचुहाने लगा था। उसने अपने लिए एक प्याला और भरा, जिस पर अड़लान की मां भौंहें सिकोड़े बिना नहीं रह सकी। किन्तु उसके चढ़े तेवर तुरन्त ही सुधर गए और वह मुस्कराकर अपने पति से कहने लगी, "लाओ पात्र मुझे दे दो। मैं तुम्हारे लिए थोड़ी शराब और ले आती हूं।"

'बूढ़ा बैल' चीखकर बोला, "तो तुम मुझे शराब पिलाकर मतवाला बना देना चाहती हो, क्यों? अब अगर मैं एक बूंद भी और पियूं तो कसम है।" यह कहकर उसने भरा प्याला वापस पात्र में उड़ेल दिया और फिर दलिये की कटोरी उठाकर उसे समाप्त करने लग गया।

अड़लान की मां ने उसकी ओर पीठ घुमाई और मेरी ओर आंख मारी। 'बूढ़ा बैल' कहे जा रहा था, "भूमि सुधार और सहकारी समितियों के आन्दोलन काल से ही इस प्रकार के विवाह क्रमशः कम होते जा रहे हैं। खुद मैंने ही 1965 में अपनी सबसे बड़ी बेटी का विवाह एक पाई मांगे बिना ही कर दिया था। बल्कि मैंने उसे कुछ कपड़े और बांस की दो टोकरियां भी दी थीं। आपको विश्वास न हो तो उसकी मां से पूछ लीजिए।"

अड़लान की मां ने सिर हिलाकर हामी भरी, "जी हां, यह बिलकुल सच है। उन दिनों हमारे घर में कुछ अनाज जमा था और ऋणदाता सहकारी समिति में हमारे नाम कुछ रकम भी जमा थी। कौन ऐसा परिवार होगा जो ऐसी स्थिति में 'नववधू मूल्य' मांगकर अपनी हंसी उड़वाता?"

'बूढ़े बैल' ने अपनी बात जारी रखी, "लेकिन पिछले कुछ वर्षों में 'पूंजीवादियों की पूंछ कतरने', व्यक्तिगत जमीन, सहायक उत्पादन व पशुपालन खत्म करते रहने से अब तो केवल यही बाकी बचा है कि लोगों के सिर ही काट दिए जाएं।"

मैंने उससे पूछा कि 'सांस्कृतिक क्रांति' से पहले उसे कितनी आय हो जाती थी। अड़लान की मां ने रूखे स्वर में स्पष्ट किया, "जब तक चंग कूय्वी के हाथ में काम रहा, हमें राशन में कम से कम 225 किलोग्राम अनाज मिल जाता था। साथ ही एक 1 य्वान का बोनस भी। अच्छे वर्षों में बोनस 1 य्वान 20 सेंट तक बढ़ जाता था। पर हाल में हमें केवल 140 किलोग्राम अनाज मिलता है और 25 सेंट का बोनस···"

'बूढ़े बैल' ने बात काटी, "यदि आप सचमुच इतने बड़े नेता हैं तो आप ही मुझे बताइए कि हम अब अपना गुजारा कैसे करें। अगर ऐसे ही चलता रहा तो बीवी-बच्चों की तो बात ही छोड़िए, हमें खुद भी 'हम बिकाऊ हैं' की तख्ती लटकानी पड़ जाएगी।"

मैंने कहना शुरू किया, "यह सब लिन प्याओ और चौगुटे···"

लेकिन 'बूढ़ा बैल' बीच ही में कह उठा, "चौगुटे को खत्म हुए भी पूरे दो वर्ष बीत चुके हैं और फिर भी हमारे गांव की हालत जस की तस है। यह तो वही बात हुई कि आप इलाज तो कर रहे हैं टूटी हड्डी का, पर हड्डी बैठाने के बजाय आप त्वचा पर केवल थोड़े से मर्क्यूरोक्रोम की मालिश ही करते रहे। ह! 'तत्काल विवाह'! अरे, जब हमारे घर में किसी नन्हीं बच्ची का जन्म होता है तो क्या हम 'तत्काल सभा' का आयोजन करते हैं? उत्पादन अपने-आप नहीं बढ़ जाएगा, समझे? आपकी ये सनक भरी सभाएं अपने पास ही घुसेड़े रखिए।"

यद्यपि मैंने शराब के केवल दो प्याले ही पिए थे, मैं अचानक ही स्वयं को चुकंदर जैसा लाल सुर्ख महसूस करने लगा। अड़लान की मां भी अवश्य कहीं लज्जित अनुभव कर ही थी, क्योंकि उसने अपनी अगली बात 'बूढ़े बैल' को लक्ष्य कर कही, "तुम ब्रिगेड-ऑफिस जाकर अपनी भड़ास क्यों नहीं निकाल आते? क्या कमाल कर रहे हो! सेक्रेटरी चू को डांट रहे हो!"

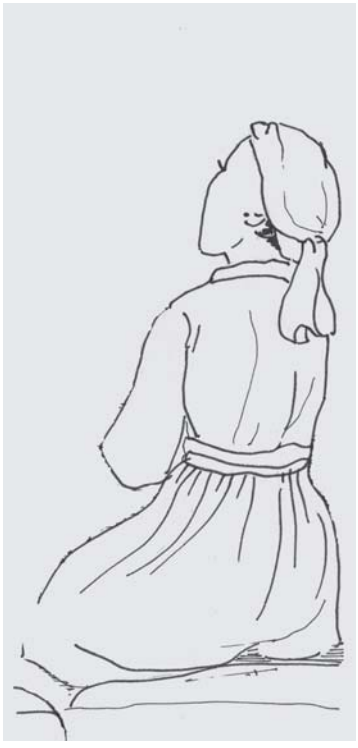

"हम्म···" 'बूढ़े बैल' ने क्षमायाचना भरे स्वर में कहा, "देखो भाई चू, मेरा मतलब आपसे नहीं था। आप तो नए आए हैं। इसमें आपका कोई कसूर नहीं है। छिः छिः, बातों-बातों में मैं भी कैसा बहक गया!"

"नहीं-नहीं, आपने तो एकदम मार्के की बात कही है। आपकी आलोचनाएं बिलकुल सही हैं। और, यह तो बड़ी अच्छी बात है कि आपने आलोचना की तो।"

मैंने अपनी बात पूरी ईमानदारी से कही थी। वह सच बोल रहा था। दूसरे,

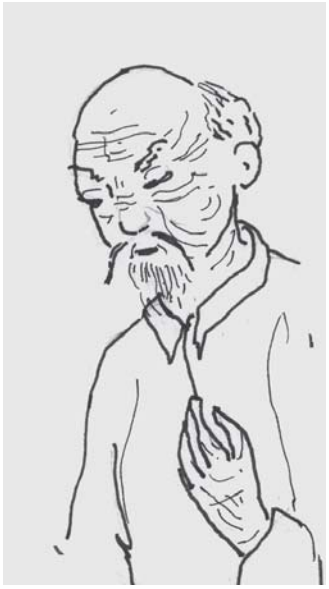

शीलिंग आने से पहले तक मैंने इस समस्याओं पर कभी कुछ सोचा नहीं था। धन-लोलुप विवाह तो निश्चित रूप से एक घृणित प्रथा थी। लेकिन क्या इस प्रथा को समाप्त करने का उत्तरदायित्व केवल कृषकों पर था? अगर हम किसानों की कठिनाइयों की जड़ तक न जा सकें, अगर किसानों के लिए एक अधिक अच्छे जीवन जीने के उपाय सुनिश्चित न कर सकें, यदि हम केवल नए विवाह कानूनों का प्रचार मात्र करते रहें, तो हम उनकी किसी भी वास्तविक समस्या का हल कैसे कर पाएंगे?

जब मैं यही सब सोच रहा था, तभी मैंने सहसा लक्ष्य किया कि अड़लान मेरी ओर एकटक अर्थपूर्ण दृष्टि से देख रही थी। मैं उन निगाहों का अर्थ समझ गया। मैं जल्दी से पूछ बैठा, "बुजुर्ग वांग अब हम असली मुद्दे पर आ जाएं। आप अड़लान के विवाह की क्या योजना बना रहे हैं?"

"बड़ी सीधी सी बात है," उसने उत्तर दिया, "मुझे 500 ख्वान मिल जाएं तो शादी कल ही हो जाएगी। या फिर, अगर आप चाहें तो आज रात में ही मुझे अदालत में पेश कर दें। तब भी वे कल शादी कर सकेंगे।"

मैं साफ देख रहा था कि अब और ज्यादा बात करना बेकार होता। इसलिए कुछ सामान्य शिष्टाचार की बातें कर मैंने विदा ली। अड़लान एक शब्द बोले बिना मुझे दरवाजे तक पहुंचाने आई। साफ था कि वह बेहद निराश हो गई थी। मैंने उसे ढांढ़स बढ़ाना चाहा, "मेरा ख्याल है कि तुम्हारे पिताजी जानबूझकर हठ पकड़ बैठे हैं। लेकिन, अगर तुम दोनों एक-दूसरे को सचमुच प्यार करते हो, तो देर-सबेर तुम्हारा विवाह होकर ही रहेगा।"

अड़लान ने केवल अपनी गर्दन हिला दी थी।

जब मैं ब्रिगेड-ऑफिस पहुंचा तो मैंने पाया कि कमरा समाचार जानने के लिए उत्सुक लोगों से खचाखच भरा हुआ था। जब उन्हें पता चला कि बूढ़े वांग के साथ मेरी बातचीत का कोई नतीजा नहीं निकला, तो उनकी मन:स्थिति वीभत्स हो उठी। वे कहने लगे कि 'बूढ़े बैल' को कभी कोई अच्छी बात समझ में ही नहीं आती और अगर कभी आ भी जाए तो वह इतना अड़ियल है कि फिर भी अपना हठ कभी नहीं छोड़ेगा। कुछ अन्य लोगों ने 'आलोचना सभा' बुलाए जाने की मांग की। लेकिन मैंने उन्हें ऐसा न करने के लिए प्रेरित किया। यदि 'बूढ़ा बैल' अभी नहीं माना तो हमें इस बारे में विचार करने को कुछ और समय देना चाहिए।

आदेशों को बलपूर्वक लागू करना तथा आलोचना और संघर्ष सभाएं आयोजित करना ऐसी समस्या के हल नहीं हैं।

जब युवाजनों ने देखा कि मैं कोई 'चतुराई भरे दांव-पेच' नहीं सुझा पा रहा तो वे धीरे-धीरे अपने घर चले गए। केवल चंग कूय्वी को वहां छोड़ गए। मैंने इस अवसर का लाभ उठाकर उससे शीलिंग की पिछले कुछ वर्षों की हालत जाननी चाही। उसने जो कुछ बताया, उससे यह बड़ी आसानी से देखा जा सकता था कि 'बूढ़े बैल' का विश्लेषण एकदम सही था। गत वर्षों में उत्पादन में गंभीर कमी आ गई थी और जनता की परेशानियां हद दर्जे तक बढ़ गई थीं। जब चंग बोल रहा था तो मैंने साफ देखा था कि उसकी आंखों में आंसू छलछला रहे थे।

एक क्षण रुककर उसने कहा, "मेरे विचार से अब पीछे की ओर कदम बढ़ा लेना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय सिद्ध होगा। पीछे की ओर, अपने मूल मार्ग पर। मिसाल के तौर पर, इस क्षेत्र में अपने भोजन के लिए हमें पर्वतों पर ही निर्भर रहना चाहिए। सबसे पहले हमें अपने उत्पादन का स्तर ऊंचा करना चाहिए…"

अगले दिन 'तत्काल विवाह' योजना के अनुसार ही सम्पन्न हुआ।

परिस्थिति के अनुपात से धूमधाम कुछ अधिक ही रही। मैंने लक्ष्य किया कि 'बूढ़ा बैल' भी उस उत्तेजित वातावरण को देखने वहां आया था। मैंने बधाई के वे शब्द नहीं पढ़े जो ऊ आएइंग ने मेरे सम्मान में लिखे थे। इसके बजाय मैंने उन्हीं बातों की चर्चा की जो 'बूढ़े बैल' ने मुझसे कही थीं और जिन बातों को मैं दिल से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानता था- जैसे कि धन-लोलुप विवाहों को जड़ से खत्म करने के लिए क्या हमें उत्पादन सुधारने के काम में अपनी समस्त शक्ति नियोजित नहीं कर देनी चाहिए, ताकि हमारी औसत आय बढ़ सके और कम्यून के सदस्य और भी अधिक समृद्धिशाली बन सकें? अन्त में 'केंद्रीय कमेटी के तीसरे पूर्णाधिवेशन की बुलेटिन' के आधार पर मैंने अपने भाषण में चंग कूय्वी के इस सुझाव से पूर्ण सहमति प्रकट की कि हमें अपने भविष्य की परियोजना तत्काल बना लेनी चाहिए।

जैसे ही मेरा भाषण समाप्त हुआ, समूचा प्रांगण देर तक बजने वाली तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा। चू थ्येवा भीड़ में रास्ता बनाते आया और कस कर मेरा हाथ पकड़ उत्तेजना भरे स्वर में कहने लगा, "सेक्रेटरी चू, आप आखिर धन-लोलुप विवाहों की समस्या की जड़ तक पहुंच ही गए हैं। जब तक ऊपर से चालू की गई नीतियां, आपने अभी जो कुछ कहा उसके अनुरूप बनी रहेंगी, हम वादा करते हैं कि इस पहाड़ी क्षेत्र के जीवन-मान को उन्नत बनाने की आप्राण चेष्टा करते रहेंगे।"

फिर तो सभी लोग शीतकालीन उत्पादन-स्तर को और भी ऊंचा ले जाने के लिए सुझाव पर सुझाव देने लगे, यथा चीनी जड़ी-बूटियों को खोद निकालना, जंगली अखरोटों और जंगली बादामों को एकत्रित करना, फावड़ों के हत्थे बनाने के लिए लकड़ी काटना, बांस की टोकरियां बनाना आदि···। वह विवाह समारोह उत्पादन-संघटन सभा में प्रायः परिवर्तित हो गया था। मैंने ऐसा कभी सोचा तक नहीं था। मैं तो केंद्रीय कमेटी के तीसरे पूर्णाधिवेशन की निहित भावना के आधार पर मात्र कुछ शब्द ही बोला था और उनसे इतनी प्रचंड ऊर्जा आलोकित

हो गई थी।

तभी भीड़ में एक रास्ता बन गया और मैंने देखा कि वांग अड़लान और चंग युनशान मेरी ओर बढ़े चले आ रहे थे। दोनों ने अपने सीनों पर बड़े-बड़े लाल फूल टांक रखे थे। वे दोनों एक विलम्ब से होने वाले विवाह समारोह में भाग लेने आ रहे थे।

"तो आखिरकार तुम्हारे पिताजी मान गए?" मैंने अड़लान से पूछा।

अड़लान तो केवल मुस्करा भर दी और उसने स्वीकृति में गर्दन हिला दी। चंग युनशान बोला, "इसके पिता ने मुझसे उसके नाम 500 ग्वान का तमस्सुक लिखवाना स्वीकार कर लिया।"

"तमस्सुक?" ऊ आएइंग चीख पड़ी, "कितनी भद्दी बात है!"

चंग युनशान हंसा और बोला, "उसने मुझसे लिखवा लिया है कि यह रकम मेरे अगले जन्म में उसे वापस दी जाएगी।"

ऊ आएइंग के साथ-साथ सारी भीड़ का अट्टहास फूट निकला।

चंग कूय्वी ने कहा, "ऐसा करतब सिर्फ 'बूड़ा बैल' ही दिखा सकता है। जरूर उसका जन्म बत्तख राशि में हुआ होगा। बत्तख को चाहे जितना भूनिए-पकाइए, उसकी चोंच हमेशा सख्त ही बनी रहेगी, क्यों?" □